सत्यमेव जयते

ନାଗରିକ नागरिक NAGRIK

अंक — 03 अवधि—वार्षिक वर्ष 2017

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर

राजभाषा विभाग. गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अध्यक्ष कार्यालय : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60 वीं बैठक

संपादक मंडल के सदस्यगण

मुख्य संपादक

श्री राम किशोर शर्मा
सहायक निदेशक एवं कार्यालय प्रमुख,
दिव्यांगजन राष्ट्रीय कैरियर सेवा केंद्र

श्री वेंकट राजू
हिंदी अधिकारी
सी.एस.आई.आर- आई.एम.एम.टी

श्री ओ. पी. झा
सदस्य-सचिव
नराकास भुवनेश्वर(के.)

श्रीमती आशा घोष
वरि.हिंदी अनुवादक

श्रीमती नमिता कर
वरि.हिंदी अनुवादक

श्री यशवंत कुमार वर्मा
कनि. हिंदी अनुवादक

श्री सुंदर लाल साव
कनि.हिंदी अनुवादक

श्री लोकेश चन्द्र लाल
कनि. हिंदी अनुवादक

श्री सुधार कु. मिश्र
कनि.हिंदी अनुवादक

ନାଗରିକ नागरिक NAGRIK

संयोजक

मुख्य संरक्षक

प्रो. आर.वी. राज कुमार

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर एवं

निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

संरक्षक

डॉ. राज कुमार सिंह

सहायक प्राध्यापक, एसईओसीएस एवं

प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक, भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर

मुख्य संपादक

श्री राम किशोर शर्मा,

सहायक निदेशक एवं कार्यालय प्रमुख,

दिव्यांगजन राष्ट्रीय कैरियर सेवा केंद्र

संपादन सहयोग

श्री ओम प्रकाश झा, सदस्य सचिव (नाराकास), भा.प्रौ.सं. भुबनेश्वर

श्री वेंकट राजू, हिंदी अधिकारी, आई.एम.एम.टी

श्रीमती आशा घोष, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, प्रधान मुख्य आयकर कार्यालय

श्रीमती नमिता कर, कनि. हिंदी अनुवादक, केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमी शुल्क एवं सेवा

श्री यशवंत कुमार वर्मा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे

श्री सुधीर कुमार मिश्र, कनि. हिंदी अनुवादक, केंद्रीय जल आयोग

श्री लोकश चन्द्र लाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षे. लेप.) का कार्यालय

श्री सुंदर लाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, महालेखाकार (ले. एवं हक.) का कार्यालय

डिजाईन : सुश्री शोभा बारिक एवं श्री निशांत वत्स

शोध छात्र भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

अंक—3

वर्ष—2017

अनुक्रमणिका

सचिव, राजभाषा विभाग का संदेश

अध्यक्ष, नराकास का संदेश

निदेशक हिंदी प्रशिक्षण का संदेश

संरक्षक का संदेश,

सदस्य सचिव का संदेश

मुख्य संपादक का संदेश

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु जाँच

59 वीं बैठक बैठक का कार्यवृत्त

पुरस्कृत कार्यालय की सूची

59 वीं बैठक के दौरान पुरस्कार वितरण

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

भारतवर्ष

प्रगतिवादी लेखक नागार्जुन

देखो आई बरखा बहार

ड़ोनेशनी डॉक्टर

नन्हीं चिड़िया

पापा के लिए .....

रचनात्मक बनिए, जीत आपकी ही होगी

आहत-ए-दिल

59 वीं बैठक की झाँकी

मन की शांति

दिल की दास्तां

तुम्हे फ़ुर्सत मिले तो कभी

प्यार

नाम उसका राम होगा

फूल

परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना- मन

संभावनाओं के शिखर

कहे ये मन

जरूरी है मुलाकात

आधुनिक जीवन

महिला सशक्तिकरण

एक रहस्य

उम्र के साथ किरदार बदलता है

कलयुग के भगवान

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

ई-पत्रिका 'नागरिक' का विमोचन

शायरी

माँ और मातृभूमी

वर्तमान का बचपन

अभिलाषा

हौंसला

इक पल की ज़िंदगी -----बदलती तस्वीर

आओ सीखें

स्वच्छ भारत

छोटा सा प्यारा सा :- मेरा गाँव

नराकास की 60 वीं बैठक का कार्यवृत्त

59 वीं बैठक के दौरान नाट्य मंचन

नि:शुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं एवं लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकारों के अपने हैं। इनसे संपादकीय मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

प्रभास कुमार झा
सचिव

Prabhas Kumar Jha
SECRETARY
Tel. : 23438266 Telefax : 23438267
E-mail : secy-ol@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन,
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
3rd FLOOR, N.D.C.C.II BUILDING,
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

सं. 11014/08/2016-रा.भा.(प)

दिनांक: 24 अगस्त, 2017

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर की ई-पत्रिका 'नागरिक' का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी के सफल एवं प्रभावी कार्यान्वयन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की महती भूमिका होती है। इन समितियों के माध्यम से राजभाषा संबंधित अद्यतन जानकारी सभी सदस्य कार्यालयों को प्रेषित की जाती है तथा यह सुनिश्चित किया जाता है कि राजभाषा हिंदी के कार्यान्वन में उत्तरोत्तर प्रगति भी होती रहे।

आधुनिक तकनीक के साथ समन्वय बिठाते हुये नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर द्वारा ई-पत्रिका 'नागरिक' का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(प्रभास कुमार झा)

अध्यक्ष की कलम से...

प्रिय साथियों,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन सिमिति (नराकास), भुवनेश्वर की ई-पत्रिका 'नागरिक' के अगले अंक के प्रकाशन से मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। पिछले वर्ष काफी अन्तराल के बाद नाराकास की ई-पत्रिका 'नागरिक' के प्रकाशन पुनः शुरू किया था, पर मुझे डर था कि पुनः इसका प्रकाशन बंद न हो जाये। ई-पत्रिका 'नागरिक' का प्रकाशन नराकास, भुवनेश्वर के लिए हर्ष का विषय है। राजभाषा के दृष्टिकोण से भुवनेश्वर 'ग' क्षेत्र में आता है और यहां की स्थानीय भाषा उड़िया है। लेकिन इन सबके बावजूद सभी सदस्य कार्यालयों से प्राप्त हिन्दी लेखों की बहुतायता यह दर्शा रही है कि वे राजभाषा के समर्पित प्रहरी हैं। इस तरह की पत्रिकाएं जहां राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होंगी वहीं यह हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सार्थक भूमिका भी निभाएंगी।

'नागरिक' के इस अंक के प्रकाशन में किसी न किसी रूप में अपना सहयोग देने वाले सभी सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को हृदय से धन्यवाद एवं शुभकामनाएं देता हूं तथा यह आशा करता हूं कि इस तरह कि वे आगे भी इसी तरह का सहयोग बनाए रखेंगे। में इसके संपादन मंडल को भी समय पर प्रकाशित करने के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ की आगे भी इसका प्रकशन जारी रहेगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका समिति के सभी सदस्य कार्यालय के कार्मिकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और उनके सोच को एक मंच प्रदान कर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाएगी।

राज कुमार

प्रो. आर. वी. राज कुमार

अध्यक्ष, नराकास भुवनेश्वर (के.)

निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
MINISTRY OF HOME AFFAIRS, DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
CENTRAL HINDI TRAINING INSTITUTE

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर की ई-पत्रिका 'नागरिक' का अगला अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस तरह की पत्रिकाएँ जहां राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ावा देने, हिन्दी के प्रचार प्रसार के प्रति उपयुक्त वातावरण सृजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, वहीं दूसरी ओर पाठकों की सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने का सुअवसर प्रदान करती हैं।

केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों आदि में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार को गति देने के लिए संगठित रूप से कार्य कर रही हैं। विभिन्न स्तरों पर किए गए व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयासों से आज हिन्दी देश की सीमाओं को लांघकर विदेशों में भी अपना परचम लहरा रही है। इस दिशा में नराकास (भुवनेश्वर) का यह कदम निश्चित रूप से सराहनीय है।

मुझे विश्वास है कि साहित्य की इंद्रधनुषी छटा बिखेरती यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों एवं पाठकों में उत्साह व ऊर्जा का संचार करेगी।

मैं 'नागरिक' के नए अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और कामना करता हूँ कि पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर सिद्ध हो।

(डॉ जयप्रकाश कर्दम)

सातवां तल, पंडित दीनदयाल अंत्योदय भवन (पर्यावरण भवन), केंद्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003
7th Floor, Pandit Deendayal Antyodaya Bhawan (Paryavaran Bhawan), C.G.O. Complex, Lodhi Road, New Delhi-110003.
दूरभाष / Telephone : 011-24364119, टेलीफैक्स / Telefax : 011-24365089
ईमेल/e-mail : dirchti-dol@nic.in/वेबसाइट/Website : www.chti.rajbhasha.gov.in.

संरक्षक का संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर की ई-पत्रिका "नागरिक" के अगले अंक का प्रकाशन पर सफल होने पर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका केंद्र सरकार के कर्मचारियों के हिंदी के पार्टी उत्साह कायम करने में काफी हद तक सफल रहा और हमारे हिंदी के पार्टी नैतिक दायित्व को याद दिलाता रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पिछले एक वर्ष हमने अपने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का प्रयोग बधाय होगा।

हमारा बहुभाषी देश में हिंदी हीं वह भाषा है जो स्थानीय भाषायों के शब्द को एक सूत्र में पिरोकर कर भारत की अखंडता और अस्मिता का वर्णन करती है। हिंदी का प्रयोग देश एवं विदेश में काफी बढ़ी है और वर्तमान केंद्र सरकार इसे और प्रचारित कर रही है। टेलीविज़न और सिनेमा के बढ़ते प्रभाव ने इसे गाँव-गाँव से लेकर विश्व के सभी भागों में प्रचलित कर दिया। आप और हम हर रोज अपने मोबाइल पर व्हाट्सएप्प और फेसबुक आये हिंदी के संदेशों, चुटकलों को हिंदी में पढने के आदि हो चुके है। इ-माध्यम से प्रकाशित यह पत्रिका हमारे सृजनात्मक सोच को और आगे बढ़ाने में मदद करेगा। मैं आशा करता हूँ कि इस अंक में प्रकाशित की गई सामग्री सभी पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगी और लेखकों को और रोचकपूर्ण आलेखों को लिखने हेतु प्रोत्साहित करेगी। मैं इस पत्रिका के सम्पादकिय मंडल को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि अगले अंक के लिए सम्पादकिय मंडल अभी से मिलजुल कर कार्य प्रारंभ कर दें।

यह पत्रिका नराकास भुवनेश्वर के सदस्य कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा और मौलिक चिंतन को विभिन्न सदस्य कार्यालयों के बीच पहुँचाने का मंच प्रदान करता है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ई-पत्रिका "नागरिक" को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंदी! जय हिंदी!

राज कु० सिंह

डॉ. राज कुमार सिंह
प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक एवं
सहायक प्राध्यापक, एसईओसीएस, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

सदस्य सचिव का संदेश

'नागरिक' के इस अंक को आप तक पहुंचाने में मैंने बस एक कड़ी का कार्य किया है। यदि मेरे प्राध्यापक प्रभारी, डॉ. राज कुमार सिंह महोदय का कुशल मार्गदर्शन मुझे न मिलता तो शायद ये कार्य इतनी आसानी से संपन्न न होता। मैं केन्द्रीय विद्यालय (सीआरपीएफ) का आभारी हूं जिन्होंने पत्रिका की अधिकांश सामग्री हमें सर्वसुलभ तरीके से उपलब्ध करा दी।

हर वर्ग के पाठक को ध्यान में रखकर पत्रिका में हर तरह के आलेख को समाहित करने का प्रयास किया गया है। पत्रिका में किसी प्रकार की त्रुटि की जिम्मेदारी मेरी होगी। सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे नवांतुक लेखकों की हौसला अफजाई करें।

शुभमस्तु।

ओम प्रकाश झा

भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

मुख्य संपादक की ओर से

सुधी सुधी पाठकों नराकास पत्रिका का तृतीय अंक आपके कमल नयनों के समक्ष है। द्वितीय अंक के प्रकाशन में बहुत हलचल हुई बैठकों में, फोन, व्हाट्सएप्प एवं ईमेल पर संवाद हुआ कुल मिलाकर एक लंबा संवाद। तृतीय अंक के लिए यह सब नहीं हुआ अथवा इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी अथवा संपादकीय टीम बिना शोर-शराबे के लक्ष्य प्राप्ति कार्य में तल्लीनता से लग गई और तृतीय अंक पूरी साज सज्जा के साथ आपके स्क्रीन पर है। मुख्य संपादक की भूमिका में मेरा योगदान नगण्य ही रहा, मगर जिसके अथक प्रयास से एवं योगदान से नराकास की पत्रिका का तृतीय अंक प्रकाशित हुआ उन सभी को मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं, कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं। कार्यालय प्रमुखों, रचनाकारों,संपादक मंडल के कर्मठ निष्ठ सदस्यों को विनम्र भाव से धन्यवाद देता हूं। विशेष धन्यवाद देता हूं नराकास के अध्यक्ष माननीय प्रोफेसर आर. वी. राजकुमार, निदेशक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर उड़ीसा का जिन्होंने तृतीय अंक के प्रकाशन हेतु न सिर्फ़ अनुमति दी, बल्कि सक्रिय कुशल मार्गदर्शन भी दिया।

पत्रिका की सामग्री पठनीय एवं संग्रहणीय भी है, यह मेरा अपना मूल्यांकन है। मेरे मूल्यांकन का महत्व सीमित है, मगर पाठकों का मूल्यांकन अवलोकनात्मक टिप्पणी , सुझाव, समीक्षा अति महत्वपूर्ण है, जो पत्रिका को और अधिक स्तरीय बनाने में सहायक होंगे एवं संपादक मंडल का पथ प्रदर्शन करेंगे। दूसरी ओर आपकी प्रतिक्रिया, टिप्पणी, प्रशंसा के चंद उदार शब्द रचनाकारों के लिए सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेंगे।

अतः सभी सुधी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप अपने विचार, जो कि पत्रिका के तृतीय अंक के इर्द-गिर्द है, संपादकीय कार्यालय को अवश्य भेजें। अच्छे एवं स्तरीय पत्रों को हम नराकास पत्रिका के चतुर्थ अंक में प्रकाशित करने की पूरी कोशिश करेंगे।

जय हिंद

रामकिशोर शर्मा,
मुख्य संपादक
सहायक निदेशक एवं कार्यालय प्रमुख,
दिव्यांगजन राष्ट्रीय कैरियर सेवा केंद्र,
भारत सरकार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय,
गंड मुंडा , भुवनेश्वर, 751 030, उड़ीसा
दूरभाष 0674 2352 317

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु जाँच

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति (राकास) का गठन कर प्रत्येक तिमाही में इसकी बैठक आयोजित करें।
- मूल पत्राचार में हिंदी का प्रयोग वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार करें।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में दें।
- धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेज़ों को अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में जारी करें।
- वेबसाइट द्विभाषी रूप में तैयार करें और समय-समय पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी अद्यतन करें।
- सभी कंप्यूटरों पर यूनिकोड सक्रिय करें।
- प्रत्येक तिमाही में एक पूर्ण कार्यदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाए।
- कार्यालयों में प्रयुक्त सभी फार्मों/ नाम पट्ट/ रजिस्टर के शीर्षक/लेखन सामग्री को द्विभाषी रूप में मुद्रित करें।
- हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त न करने वाले कार्मिकों को भाषा (प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत) का प्रशिक्षण दिलवाएं। इसके साथ ही संबंधित कर्मचारियों को हिंदी टंकण/ हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए भी नामांकित करें।
- विज्ञापनों को हिंदी और अंग्रेजी के समाचार पत्रों में एक साथ प्रकाशित करें।
- हिंदी पुस्तकों पर लक्ष्य अनुसार व्यय किया जाए। वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य हिंदी में उपलब्ध करवाया जाए।
- कार्यालय के अनुभागों का समय-समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाए।
- कार्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (राजभाषा विभाग) को तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन भेजी जाए।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालयों प्रमुखों की उपस्थिति अनिवार्यतः सुनिश्चित की जाए।
- सेवा पंजियों में प्रविष्टियाँ द्विभाषी रूप में करें।
- राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987 में दिए गए बिंदुओं का अनुपालन सुनिश्चत किया जाए।
- कार्यालय में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाए।
- कार्यालय परिसर में राजभाषा के अनुकुल वातावरण के लिए "आज का शब्द" और "आज का विचार" प्रदर्शित करें।
- संस्थान में प्रयोगार्थ सभी प्रकार की नेमी टिप्पणियों को फाइलों पर मुद्रित करें और लक्ष्य को प्राप्त करें।
- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की संपूर्ण प्रोत्साहन योजनाओं को अपने कार्यालय में लागू करें।

उपर्युक्त जानकारी कार्यालय के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को दें और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करें। वार्षिक कार्यक्रम के सभी लक्ष्य गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.nic.in से डाउनलोड किए जा सकते है।

- संपादन समिति

59 वीं बैठक बैठक का कार्यवृत्त

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 59वीं बैठक दिनांक 24.08.2016 को अपराह्न 03.00 बजे अध्यक्षीय कार्यालय "भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर" के सामंतपुरी परिसर में प्रो.आर.वी.राजकुमार, अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में श्री अजय मलिक, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भी उपस्थित थे। बैठक में सदस्य कार्यालयों के कुल 90 कार्यालय प्रमुख/प्रतिनिधि उपस्थित थे।

बैठक का आरंभ करते हुए श्री नितिन जैन, सदस्य-सचिव, नराकास, भुवनेश्वर (के.) ने सभी सदस्यों का स्वागत किया और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर (के.) की गतिविधियों एवं इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय की अनुमति से कार्यसूची पर बिंदुवार चर्चा प्रारंभ की गई।

मद सं. 59.0 **गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि :-** सदस्य-सचिव ने दिनांक 29.01.2016 को आयोजित 58वीं बैठक के कार्यवृत्त को पुष्टि प्रदान करने हेतु प्रस्तुत किया। श्री विजय कुमार शर्मा, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कर्मचारी भविष्य निधि ने जानकारी दी कि की "नागरिक" पत्रिका का इससे पूर्व सिर्फ एक ही अंक प्रकाशित किया गया था। उन्होंने इसे सुधारने हेतु अनुरोध किया। तदोपरांत सदस्यों ने सर्वसम्मति से 58वीं बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की।

मद सं. 59.1 **अनुवर्ती कार्रवाई :-** सदस्य-सचिव ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर निम्न अनुवर्ती कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत की –

58.1 नराकास भुवनेश्वर(के.) की वेबसाइट का निर्माण :- सदस्य-सचिव ने जानकारी दी कि एनआईसी के सहयोग से नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट का निर्माण किया गया है। यह वेबसाइट www.tolicbbs.nic.in पर उपलब्ध है।

58.2 पत्रिका का प्रकाशन :- सदस्य-सचिव ने जानकारी दी कि नराकास भुवनेश्वर की ई-पत्रिका नागरिक का नवीन अंक तैयार है जिसका लोकार्पण इस बैठक में किया जाएगा।

58.3 सदस्य कार्यालयों का अंशदान :- सदस्य-सचिव ने जानकारी दी कि सदस्य कार्यालयों से अंशदान प्राप्त करने के लिए सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों को पत्र लिखकर अंशदान भुगतान करने के लिए अनुरोध किया गया था। अनेक सदस्य कार्यालयों ने अंशदान का भुगतान कर दिया है परंतु अभी भी बहुत से सदस्य कार्यालयों ने अंशदान का भुगतान नहीं किया है और उन सभी सदस्य कार्यालयों से अति शीघ्र अंशदान भुगतान करने का अनुरोध किया गया।

कार्रवाई – सभी संबंधित सदस्य कार्यालय/सदस्य-सचिव

मद सं. 59.4 **वर्ष 2015-16 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन करने वाले कार्यालय को चल वैजयंती शील्ड पुरस्कार :-** नराकास भुवनेश्वर के अधीन सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्यों हेतु "चल वैजयंती शील्ड पुरस्कार" की शुरुआत की गई। पुरस्कार दो वर्गों में (बड़े कार्यालय एवं छोटे कार्यालय) में विभाजित किए गए थे। बड़े कार्यालय में प्रथम पुरस्कार सी.एस.आई.आर. – आई.एम.एम.टी, द्वितीय पुरस्कार, क्षेत्रीय कर्मचारी भविष्य निधि, तृतीय पुरस्कार महालेखाकार का कार्यालय (सा.एवं सा.क्षे.ले.परि.) और सांत्वना पुरस्कार प्रधान निदेशक का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे को प्राप्त हुआ। छोटे कार्यालय में प्रथम पुरस्कार जवाहर नवोदय विद्यालय, खोर्धा, द्वितीय पुरस्कार केंद्रीय रेशम बोर्ड एवं तृतीय पुरस्कार भारतीय खान ब्यूरो को प्राप्त हुआ।

मद सं. 59.5 **सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका पुरस्कार :-** नराकास भुवनेश्वर (के.) के अधीन सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिकाओं में श्रेष्ठ पत्रिका को पुरस्कृत करने के लिए सर्वश्रेष्ठ पत्रिका पुरस्कार योजना की शुरुआत की गई। वर्ष 2015-16 की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का पुरस्कार महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी) की पत्रिका "वातायन" को प्रदान किया गया।

मद सं. 59.6 **नराकास भुवनेश्वर के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिता के पुरस्कार :-** नराकास भुवनेश्वर के तत्वावधान में दिनांक 26.04.2016 को आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

मद सं. 59.7 **अध्यक्ष महोदय की अनुमति से कोई अन्य मद :-** सदस्य-सचिव ने समिति के सदस्यों द्वारा प्राप्त सुझावों के आधार पर सभी समितियों के पुनर्गठन हेतु अनुरोध किया। इसके साथ ही उन्होंने ऑनलाइन तिमाही प्रगति रिपोर्ट में तथ्यपरक आँकड़ों भरने के लिए एक कार्यशाला के आयोजन हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

कार्रवाई – सभी सदस्य कार्यालय/ सदस्य-सचिव

अध्यक्ष महोदय एवं उप निदेशक,कार्यान्वयन का अभिभाषण : प्रो. आर.वी. राज कुमार अध्यक्ष, नराकास ने अपने संबोधन में नराकास भुवनेश्वर (के.) की 59वीं बैठक में सभी का स्वागत करते हुए श्री अजय मलिक, उप निदेशक (कार्यान्वयन) के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने अपने संबोधन में नराकास, भुवनेश्वर द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए की जा रही गतिविधियों हेतु प्रसन्नता व्यक्त की। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हमने नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट का लोकार्पण, ऑनलाइन पोर्टल की शुरुआत, कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा विभिन्न प्रतियोगिता के आयोजन के माध्यम से नगर में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ाने हेतु प्रयास किया है। उन्होंने नराकास भुवनेश्वर की प्रथम ई-पत्रिका "नागरिक" के प्रकाशन एवं सदस्य कार्यालयों के बीच राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार वितरण के कार्य को एक नई दिशा बताया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पत्रिका का प्रकाशन जहाँ सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की रचनाशीलता को मंच प्रदान करता है वहीं पुरस्कार वितरण सदस्य कार्यालयों को राजभाषा में और अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों को अपने-अपने यहाँ राजभाषा संबंधी गतिविधियों को निरंतर बढ़ाने और नराकास के तत्वावधान में कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन कर

राजभाषा के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने अपने संबोधन के अंत में नराकास भुवनेश्वर की सभी उप समितियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में उपस्थित श्री अजय मलिक, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग ने अपने संबोधन में सभी सदस्य कार्यालयों को राजभाषा नीति से संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने राजभाषा के तीन स्तंभों प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना पर विशेष बल दिया। इसके साथ ही उन्होंने प्रशिक्षण स्थिति पर बोलते हुए राजभाषा विभाग द्वारा विकसित ऑनलाइन प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर "लीला" से संबंधित जानकारी दी। उन्होंने अपने संबोधन के अंत में सभी सफल प्रयासों के लिए अध्यक्ष नराकास एवं सभी उप-समितियों को बधाई दी।

कार्यक्रम का समापन श्री नितिन जैन, सदस्य-सचिव, नराकास भुवनेश्वर द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक "यह शादी नहीं हो सकती" के साथ हुआ।

श्री आर.एन.चाँद, हिंदी अधिकारी, महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न हुई।

(नितिन जैन)
सदस्य-सचिव, नराकास

(प्रो.आर.वी.राज कुमार)
अध्यक्ष, नराकास एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर

- संपादन समिति

⇒ **राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है। - अवनींद्र कुमार विद्यालंकार।**

⇒ **हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है। - बाबूराम सक्सेना।**

⇒ **समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है। - कृष्णस्वामी अय्यर।**

⇒ **हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है। - शंकरराव कप्पीकेरी।**

⇒ **अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगलों ने जिस देशभाषा का स्वागत किया वह ब्रजभाषा थी, न कि उर्दू। -रामचंद्र शुक्ल।**

हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए चल वैजयंती शील्ड पुरस्कार

बड़े कार्यालय / Big Offices

1. सी.एस.आई.आर - (खनिज़ एवं पदार्थ एवं प्रौद्योगिकी संस्थान)

CSIR – Institute of Minerals & Materials Technology

2. क्षेत्रीय कर्मचारी भविष्य निधि, भुवनेश्वर

Regional Employee Provident Fund , Bhubaneswar

3. महालेखाकार का कार्यालय (सा. एवं सा.क्षे.)

Office of the Accountant General (G&SSA)

सांत्वना/ Consolation

1. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व तट रेलवे

Principal Director Audit, East Coast Railway

छोटे कार्यालय / Small Offices

1. (जवाहर नवोदय विद्यालय, खोर्धा

Jawahar Navodaya Vidyalaya, Khordha

2. केंद्रीय रेशम बोर्ड, भुबनेश्वर

Central Silk Board, Bhubaneswar

3. भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर
Indian Bureau of Mines, Bhubaneswar

सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका पुरस्कार

महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी) की पत्रिका "वातायन"
Accountant General Office, Bhubaneswar

59 वीं बैठक के दौरान पुरस्कार वितरण

59 वीं बैठक के दौरान पुरस्कार वितरण

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

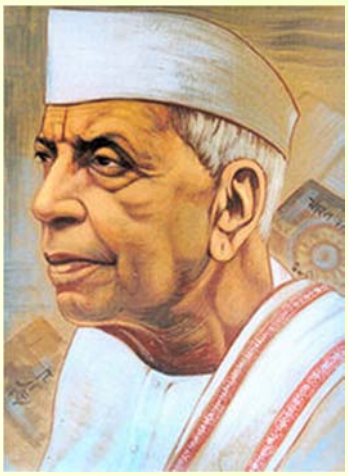

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिन्दी काव्य के निर्माता ते। राष्ट्रीय-सांस्कृतिक नवजागरण ने हमारी संस्कृति, इतिहास और साहित्य में विश्वास का जो स्वर उत्पन्न किया था, उसकी अधिकाधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति, सबसे पहले मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में ही हुई। उनका जन्म 03 अगस्त, 1886 को चिरगांव, झांसी, उत्तर प्रदेश में एक संभ्रांत वैश्य कुल में कनकने परिवार में हुआ था।

आरंभिक शिक्षा झांसी के राजकीय विद्यालय में हुई। किन्तु, उसमें कवि का मन नहीं रमा और अंतत: घर पर ही उन्होंने संस्कृत-हिन्दी तथा बांग्ला का व्यापक स्वाध्याय किया। एक बार मैथिलीशरण ने कहा था, "मैं क्यों पढ़ाई करूंगा? पढ़ने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं। लोक-बाग मुझे पढ़ेंगे।" बचपन में उनकी कही यह बात आगे चलकर सही साबित हुई।

मुंशी अजमेरी जी ने उनका मार्गदर्शन किया और उन्होंने 12 वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में कविता रचना आरंभ की। महादेवी वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी तथा अज्ञेयजी ने मुक्त मन से स्वीकार किया कि उन्होंने खड़ी बोली काव्य के संस्कार मैथिलीशरण गुप्त से ही लिए और वे उन्हें अपना काव्य गुरु मानते थे।

उनकी प्रमुख रचनाएं निम्न प्रकार से हैं :

मौलिक काव्य रचनाएं : रंग में भंग, जयद्रथ वध, साकेत, भारत-भारती, शकुन्तला इत्यादि।

गीतिनाट्य : तिलोत्तमा, चन्द्रहास, अनध, गृहस्थ गीता इत्यादि।

अनुदित कृतियां : पलासी का युद्ध, वीरांगना, गीतामृत इत्यादि।

संस्मरण एवं आत्मकथा : श्रद्धांजलि, हमारा वृन्दावन, अनुज, आचार्यदेव इत्यादि।

निबंध एवं समालोचना : हिन्दी कविता किस ढंग की हो, बृजनंदन सहाय के उपन्यास।

दिनांक 12 दिसंबर 1964 को हृदयगति रुक जाने के कारण 78 वर्ष की आयु में चिरगांव में उनका देहावसान हो गया।

उनकी एक कविता का अंश :

भारतवर्ष

मस्तक ऊँचा हुआ मही का, धन्य हिमालय का उत्कर्ष।
हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र हमारा, भूमि-भाग्य-सा भारतवर्ष॥

हरा-भरा यह देश बना कर विधि ने रवि का मुकुट दिया,
पाकर प्रथम प्रकाश जगत ने इसका ही अनुसरण किया।
प्रभु ने स्वयं 'पुण्य-भू' कह कर यहाँ पूर्ण अवतार लिया,
देवों ने रज सिर पर रक्खा, दैत्यों का हिल गया हिया!
लेखा श्रेष्ट इसे शिष्टों ने, दुष्टों ने देखा दुर्द्धर्ष!
हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र हमारा, भूमि-भाग्य-सा भारतवर्ष॥

अंकित-सी आदर्श मूर्ति है सरयू के तट में अब भी,
गूँज रही है मोहन मुरली ब्रज-वंशीवट में अब भी।
लिखा बुद्ध-निर्वाण-मन्त्र जयपाणि-केतुपट में अब भी,
महावीर की दया प्रकट है माता के घट में अब भी।
मिली स्वर्ण लंका मिट्टी में, यदि हमको आ गया अमर्ष।
हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र हमारा, भूमि-भाग्य-सा भारतवर्ष॥

आर्य, अमृत सन्तान, सत्य का रखते हैं हम पक्ष यहाँ,
दोनों लोक बनाने वाले कहलाते है, दक्ष यहाँ।
शान्ति पूर्ण शुचि तपोवनों में हुए तत्व प्रत्यक्ष यहाँ,
लक्ष बन्धनों में भी अपना रहा मुक्ति ही लक्ष यहाँ।
जीवन और मरण का जग ने देखा यहीं सफल संघर्ष।
हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र हमारा, भूमि-भाग्य-सा भारतवर्ष॥

मलय पवन सेवन करके हम नन्दनवन बिसराते हैं,
हव्य भोग के लिए यहाँ पर अमर लोग भी आते हैं!
मरते समय हमें गंगाजल देना, याद दिलाते हैं,
वहाँ मिले न मिले फिर ऐसा अमृत जहाँ हम जाते हैं!
कर्म हेतु इस धर्म भूमि पर लें फिर फिर हम जन्म सहर्ष
हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र हमारा, भूमि-भाग्य-सा भारतवर्ष॥

संकलनकर्ता – ओम प्रकाश झा, कनिष्ठ अनुवादक, भा. प्रौ.सं. भुवनेश्वर

प्रगतिवादी लेखक नागार्जुन

नागार्जुन का पूरा नाम श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 'नागार्जुन' था। १९११ की ज्येष्ठ पूर्णिमा को जन्मे नागार्जुन का मूल निवास स्थान ग्राम - तरौनी, जिला - दरभंगा (बिहार) था। उनके उपन्यास हिन्दी और मैथिली की 'क्लासिक' परंपरा में आ चुके हैं। उनके काव्य संग्रह प्रगतिशील साहित्य के आधार स्तंभ हैं।

मैथिली काव्य संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछ' को १९६८ का साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था। हिन्दी कविता के लिए मध्य प्रदेश का सर्वोच्च सम्मान 'मैथिलीशरण गुप्त' सम्मान प्राप्त हुआ एवं संपूर्ण साहित्य के लिए बाबा नगार्जुन को उत्तर प्रदेश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत-भारती' सम्मान से सम्मानित किया गया। पश्चिम बंगाल शासन द्वारा 'राहुल सम्मान' से सम्मानित नागार्जुन भारतीय साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे।

उनकी प्रमुख कृतियाँ - युगधारा, सतरंगे पंखोवाली, प्यासी पथराई आंखे, खिचडी, विप्लव देखा हमने, हजार-हजार बांहो वाली, रत्नगर्भा, (हिन्दी काव्य संग्रह); चित्रा और पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली काव्य संग्रह); भस्मांकुर (हिन्दी खंड काव्य); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन,कुंभीपाक (हिन्दी उपन्यास); पारो और नवतुरिया (मैथिली उपन्यास) हैं, जिन्हें कालजयी रचना का गौरव प्राप्त है। आपने ५ नवंबर १९९८ को इस भौतिक जगत को अलविदा कह दिया।

-गौतम झा (शिक्षक)
के.वि.नं .2 भुवनेश्वर

देखो आई बरखा बहार

इठलाती लाई फुहार
देखो आई बरखा बहार
रिमझिम - रिमझिम झड़ी लगाई ,
प्रकृति कैसे मुस्कराई
लहराते पत्ते - पत्ते पर
हरियाली इसने बिखराई

ऋतुओं ने किया श्रुंगार
देखो आई बरखा बहार
धरती माँ प्यासी थी
पियाकर अमृत [पानी] को हंसी थी
जीव - जगत के होंठो पर हँसी आई
देखो बरखा बहार आई।

- उषा त्रिपाठी
प्राथमिक शिक्षिका
के.वि.नं .2 भुवनेश्वर

डोनेशनी डॉक्टर

बेटा हुआ सयाना, लेकिन है दिमाग का गोबर।
पिता कहे हिम्मत कर बेटा, तिलक मिलेगा दोबर।।
घूस-पैरवी की दुनिया में, मैं क्यों घबराऊं।
सबसे अच्छे विद्यालय में, मैं दाखिला तुझे कराऊं।।
चोरी करो परीक्षा में, तुम शिक्षक को धमकाओ।
ट्यूशन करो हर एक विषय में, फर्स्ट क्लास ले आओ।।
गणित विषय में क्या रखा, बायोलॉजी तुझे पढ़वाऊं।
समय बीतते देर नहीं, सर्जन तुझे बनवाऊं।।
डॉक्टरी में नाम लिखा लो, डोनेशन के बल से।
कंप्यूटर भी सीखो, डिग्री ले लो छल से।।

सर्जन बन जाओगे बेटा, इसमें जरा न शक कर।
मैं भी तुझे बुलाऊँगा तब, सर्जन साहब कहकर।।
इस खर्च-बर्च की दुनिया में, जब सर्जन बनकर आओगे।
सरकारी हॉस्पिटल में तब तुम, हेड सर्जन बन जाओगे।।
हॉस्पीटल से तलब मिलेगा, प्राइवेट क्लीनिक अलग खुलेगा।
रोज रुपये की बरसात होगी, फूस तोड़कर महल बनेगा।।
नौकर-चाकर, लौड़ी-दाई, पहरेदार रख पाओगे।
दूध-घी और मेवा मिष्ठान्न, सबकी तोंद फुलाएगा।।

गाड़ी-घोड़ा अलग से लूंगा, तिलक पूरा गिनवाउंगा।
लेडी डॉक्टर से ब्याह, तुम्हारी मैं रचवाउंगा।।
हॉस्पिटल और क्लीनिक से, तब फुर्सत न पाओगे।
मारुति गाड़ी से घर पर, रुपये का गट्ठर लाओगे।।
नाम बढ़ेगा तेरा-मेरा, सभी शीष झुकाएंगे।
बड़े-बड़े साहब तब, दरवाजे पर भीड़ लगाएंगे।।
लेकिन बेटा काम कठिन है, तुम तो कर न पाओगे।
उल्टा पुल्टा काम कर मेरा नाम डुबाओगे।।

- यमुना प्रसाद
कनिष्ठ अधीक्षक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

नन्हीं चिड़िया

शाम का समय था । धीरे-धीरे अँधेरा अपना साम्राज्य फैला रहा था ।एक छोटी सी चिड़िया अबतक खेत में दाना चुग रही थी। अचानक चिड़िया ने इधर-उधर देखा, रात हो चुकी थी, वह व्याकुल हो उठी। उसे घर पहुँचने का डर सताने लगा । आव देखा-न-ताव वह घर जाने के लिए फुर्र-से उड़ी। कुछ दूर जाने के बाद उसे लगा कि वह घर का रास्ता भूल गई है। पीछे मुड़कर देखा तो सामने एक उपवन दिखाई दिया।वहाँ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। वह उपवन में जाकर गुलाब के फूल से कहा --- क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे? गुलाब ने बेमन से कहा—नहीं-नहीं!मैं तुम से दोस्ती नहीं करूँगा! गुलाब की बात सुनकर चिड़िया निराश हो गई । घर की छवि उसकी आँखों के सामने घूम गई। माता-पिता याद आने लगे। चिड़िया ने साहस जुटाकर फिर से वही प्रश्न दोहराया --- क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे ? गुलाब को दया आ गई ।इस बार गुलाब ने जवाब देते हुए कहा— क्यों नहीं ! क्यों नहीं ! मैं तुमसे दोस्ती अवश्य करूँगा ।चिड़िया नेदोस्ती के हाथ बढ़ा दिए और कहने लगी-- जब दोस्ती हो ही गई है तो यह बताओ कि क्या तुम मेरे घर का रास्ता बता सकते हो?गुलाब ने कहा --- तुम्हें चिंतित होने की ज़रूरत नहीं ? एक उपाय है, लो यह एक नन्हा-सा फूल । घर जाते समय इसे अपने पास ही रखना । यह आपको घर तक पहुँचाने में मदद करेगा। सही रास्ता दिखाएगा। जब तुम मुसीबत में होओगी तब तुम इसे चूम लेना। तो यह तुम्हारी सही मार्ग दर्शन करेगा ।

साहस, उत्साह और आत्मविश्वास जुटाकर छोटी चिड़िया घर के लिए प्रस्थान की। चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा था, उसे कुछ सूझ नहीं रहा था । साहस और उत्साह जवाब दे रहे थे? आत्मविश्वस लड़खड़ाने लगा था। फिर भी वह निरंतर आगे बढ़ी चली जा रही थी। अचानक उनके सामने एक विकराल काया आ खड़ा हुआ । यह देखकर चिड़िया काँप गई। उनके पाँव तले ज़मीन खिसक गई। इस संकट के समय गुलाब और गुलाब का दिया हुआ नन्हा-सा फूल याद आ गई। उसने फौरन गुलाब के फूल को निकाला और चूम लिया। आँखों से अँधेरा और विकराल काया अदृश्य होने लगा और उनकी जगह एक श्वेत काया अप्सरा जैसी देवी खड़ी दिखाई दी। देवी ने चिड़िया से पूछा- "तुम इतनी घबरायी हुई क्यों हो ? तुम किससे डर रही हो? इतनी रात कहाँ जा रही हो?" चिड़िया ने गुलाब के फूल को हाथ में लिए हुए सारे प्रश्नों के उत्तर भयभीत होकर दी और निवेदन किया कि 'तुम मुझे घर पहुँचने के लिए मदद कर सकती हो?' देवी ने उनका हाथ पकड़ते हुए कहा - 'क्यों नहीं ,कहो क्या बात है ?' चिड़िया ने कहा-- मैं अपने घर का रास्ता भूल गई हूँ । अरे! डरो मत ! सब ठीक हो जाएगा ! सुनो – मैं तुम्हें जो भी बताउँगा ठीक वैसा ही करना और आगे बढ़ना । देखो !यहाँ से सीधे उत्तर दिशा की ओर चलना, आगे जाकर तुम्हें एक उँची और भव्य इमारत दिखाई देगा । इमारत के सामने क्षण-भर रूक जाना फिर पूर्व दिशा की ओर चलना, एक बात और याद रखना -- कि जो फूल तुम्हें गुलाब ने दिए हैं उसे एक बार याद करना और चूम लेना – तुम्हें अपनी मंजिल साफ-साफ दिखाई देगी। आश्वासन पाकर चिड़िया गदगद हो गई और आगे चल पड़ी।

अँधेरी रात काली चादर ओढ़े रात की निस्तब्धता को बढ़ा रही थी । कहीं सियारों का क्रंदन तो कहीं कुत्तों के भौंकने की आवाज़ तो कहीं साँय-साँय चलती ठण्डी हवाओं का ठिठुरन। आसमान निरंतर आँसू टपका रही थी।ये सब मिलकर चिड़िया को परेशान कर रही थी।डरी हुई चिड़िया मंजिल की आस में उत्तर दिशा की ओर कदम बढ़ाए चली जा रही थी कि एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति दिखाई दिया । वह उसके पास जाकर पूछा कि यहाँ इमारत कहाँ है ? उसने कहा – आगे जाओ इमारत मिल जाएगा।

जाते-जाते कुछ देर बाद उसे इमारत दिखाई दिया। भव्य और आकर्षक। वह मंत्र –मुग्ध होकर देखती रही। अचानक उसे अप्सरा देवी की बातें याद आई। वह रूक गई और पूर्व दिशा की ओर कदम बढ़ा दी थी।एक विशाल मैदान से वह गुजरते हुए गुलाब के नन्हें फूल को चूम ली । आँखों के सामने से अँधकार दूर होने लगा।सब कुछ स्पष्ट दिखाई देनेलगा । तभी किसी के फुसफुसाने की आवाज़ सुनाई दी। वह पीछे मुड़ी तो देखा कोई अदृश्य छाया हाथ बढ़ाए सामने चलाआ रहा था।अरे छोटी चिड़िया तुम कहाँ थी? कहाँ से आ रही हो? इतनी रात यहाँ? कहते हुए गले से लगा लिया । वह और कोई नहीं अपने उपवन का माली ही था। उसने चिड़िया को घर के अंदर ले गया और उसकी माता को सौंप दिया। चिड़िया अपने आप को माता के गोद में पाकर फूला न समायीं।

- नीति कुमारी
कक्षा-नवीं('अ')
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

पापा के लिए .....

वो भी क्या दिन थे ...
जब आप हाथ पकड़ते थे और हम दूर चले जाते थे ,
हम रोते रहते थे और आप मनाते थे ,
संगीत के उन सुरों को हम तक पहुंचाते थे,
जिसको आज हम पहचानते है ...
उन धुनों को सुनते ही आखें भर आतीं है ,
जो आप आखरीं बार सुनाए थे ,
आज न वो सुर है न आवाज़
न डांट है न पुकार .....
एक दिन मनाया जाता है आपके नाम से
तब तो पता नहीं था वो क्या हे ...
जब पता चला तब आप ही नहीं रहे ,
पापा ..... याद तो हम भी करते है ,
आप के लिए एक दिन हम भी मनाते है
लेकिन.....
वो पितृ दिवस नहीं श्राद्ध दिवस है ,
वो भी क्या दिन थे ....जब आप साथ थे ,
लेकिन अब आप बहुत याद आते हैं .....

- सुचरिता रथ
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

रचनात्मक बनिए, जीत आपकी ही होगी

“जीतने वाले कोई अलग काम नहीं करते, वे हर काम को अलग ढंग से करते हैं।”

संसार में सबसे ज्यादा खुश कौन रहता है ?? – “बच्चा”

बिल्ली से सीखो रचनात्मक बनना :-

क्या आपने कभी बिल्ली,मगरमच्छ आदि जैसे जानवरों को अपना शिकार पकड़ते देखा है। जब बिल्ली चूहे को अपने मुहं में पकड़ती है तो फिर चूहे को कोई नहीं बचा सकता। इसी तरह मगरमच्छ भी ऐसे ही करता है। जब बिल्ली चूहे को अपने दांतों से पकड़ती है तो चूहे की उसी पल मौत हो जाती है |

वही बिल्ली/मगरमच्छ अपने छोटे-छोटे बच्चों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए अपने मुंह से पकड़ती है । बिल्ली अपने दांतों से अपने बच्चे का गला पकड़ती है और एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है, जबकि मगरमच्छ अपने मुँह में अपने बच्चों को रख कर नदी में लेकर जाती लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि दोनों के बच्चों को एक खरोंच तक नहीं आती ।

बिल्ली और मगरमच्छ के एक ही कार्य को करने के तरीकों में कितना अंतर है । यही अंतर “रचनात्मकता (Creativity)” का आधार है |

“प्रत्येक सफल व्यक्ति में एक खूबी समान रूप से पाई जाती है और वह है – रचनात्मकता”

क्रिएटिविटी के बिना कोई भी सफल नहीं हो सकता । रचनात्मकता (Creativity) का अर्थ चित्रकार, कवि या लेखक बनने से नहीं बल्कि प्रत्येक कार्य को सच्चे दिल से करने से है । रचनात्मकता हर पल कुछ नया सीखने एवं प्रत्येक कार्य को उत्साह के साथ बेहतर तरीके से करने की आदत है । कार्य चाहे छोटा हो या बड़ा, रचनात्मकता उसमें नए रंग भर देती है । रचनात्मक व्यक्ति हर कार्य में खुशियाँ ढूंढ ही लेता है और यही उसकी सच्ची सफलता होती है।

रचनात्मक बनिए, काम करने के तरीकों में बदलाव लाइए, खुद पर विश्वास कीजिए जीत आपकी ही होगी |

- सुधीर कुमार मिश्र
केन्द्रीय जल आयोग

आहत-ए-दिल

१.

यूं तो तेरी आँखों में समन्दर दिखता है,

चाहता हूँ देखना मंजिल मेरी , पर मुकद्दर दिखता है...

चाह नहीं है अब किसी और को पाने की,

क्योंकि

तुझमे मुझे अपना हमसफ़र दीखता है।

२.

तू चाहती है, मै भी चाहता हूँ

अब समझना किस बात का

और

यदि तू नहीं चाहती , पर मै चाहता हूँ

तो

फिर समझाना किस बात का

३.

तू रूह है मेरी,तू चाह है मेरी

तू हसरत है मेरी , तू फितरत है मेरी

ऐ -प्यार को जान कर भी अनजान करने वाली ,

तू ख्वाहिश है मेरी

४.

यूँ तो हम इश्क किया नहीं करते

और कभी दुसरो का इश्क छीना नही करते

यदि हम चाहे तो गैरों को भी हमनवा बना सकते हैलेकिन इस तरह

की बागावत हम किया नही करते

५.

तुम ना खेलो मेरे जज्बातों से इस तरह ,

कि पिघल जाये मेरा दिल पानी की तरह।

यदि तुम न सह सके इस प्यार के बोझ को,तो बोलो

पर मत मारो मुझे ठोकर गैरों की तरह

६.

समझ नही आता की ,

जिन्दगी के नाम से तुझको जानू या फिर तेरे नाम से

जिन्दगी को जानू

अजीब दस्तूर है ये खुदा का

तुझसे मिलता हूँ तो जिन्दगी-जिन्दगी लगती है

और बिछुड़ता हूँ तो जिन्दगी- बेरंग लगता है।

७.

लोग रूप देखते है

हम दिल देखते है

लोग सपना देखते है

हम हक़ीकतदेखते है

बस फर्क इतना है कि

लोग दुनिया में दोस्त देखते है

८

जब तुम पास होती हो मेरे ...

तो तेरी आँखों मे डूब जाने ,

तेरे वालो के साथ खेलने ,

और तुझे अपनी बाहों में लेने का मन करता है

'पर कमबख्त इस समाज से डर लगता है'

समाज के बंधन में रहकर भी टालने का मन करता है

बेपरवाह होकर और प्यार करने का मन करता है

एक दूसरे को अपनाने और ख्वाइशो को पूरा करने का मन करता है

'पर क्या करें परिवार की बेइज्जती से डर लगता है'

९

यूँ ये लम्हें गुजर जाते है तेरी याद में

याद करता हु तो शादबाती हो

और याद न करू तो सताती हो

अजीब दस्तूर है ए मोहब्बत का

मुक़म्मल भी होना चाहती है पर तड़पाकर

१०

यूँ तो सादगी का दर्पण है तेरी आँखे

पर मोहब्बत में क़त्ल करने में माहिर है तेरी आँखे

चाहत के आंसू निकालती है तेरी आँखे

पर बाद में घायल कर देती है तेरी आँखे

मुझको इस क़दर निहारती है तेरी आँखे

की मदहोशी रूपी प्याला पिलाती है तेरी आँखे

क्या करूँ अब समझ नही आता

क्योंकि मुझको अपनेपन का एहसास कराती है तेरी आंखे

तेरी आंखे ....तेरी आँखे ....तेरी आंखे#

११

यूँ तो पीठ पीछे से वार करते हो

सामने से आकर देख पाकिस्तान

अपना जीवन - यापन तो कर नहीं सकता

मांगने चला switzerland of हिंदुस्तान

याद रखना ! यदि जाग गया हिन्दुस्तानियों के अन्दर का इंसान

तो पाकिस्तान को बना देगा रेगिस्तान|||||

१२

तुम्हे जितना चाहने की चाहत कल थी,

उतनी आज भी है

यदि तुम मुझे भूलना मुनासिब समझती हो ,

तो भूल जाना

पर आशियानों पर ले जाने की चाहत जितनी कल थी

उतनी ही आज भी है

१३

हमे खुदको अंदाज़ा नही है कि

कितना प्यार कर बैठे है आपसे

बस यूँ ही समझ लो, यदि

तुम फूल हो तो,मै एक भँवरा

तुम नदी हो तो, मै एक किनारा

और यदि तुम आसमा हो तो मै एक सितारा।।

१४

अब लगता नहीं की रह पाएंगे तुम बिन

क्यूंकि हर सांस में तुम इस कदर रम गई हो

यदि साथ छोड़ा तो सह ना पाएंगे हम

यूँ तो शायद कमी थी प्यार में

जो उसने किसी और को मेरी जगह किसी और को दे दी

समझ नहीं आता,

यह उसकी देह की चाह है

या फिर मुझे तडपा कर मरने की चाह

प्यार थोडा नहीं बेशुमार किया था

तुझे एक बार नहीं हज़ार बार अपना किया था

पता नही कैसा जादू किया किसी और ने ,

कि तूने मुझे खुश रखने का व्यर्थ (बेवजाह) प्रयास किया था

- रिंकू मीणा,
छात्र,
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

59 वीं बैठक की झाँकी

मन की शांति

एक बार भगवान बुद्ध अपने कुछ अनुयायियों के साथ यात्रा कर रहे थे। जब वे एक झील से हो कर गुजर रहे थे तो उन्होंने अपने शिष्यों में से एक से कहा, 'मुझे प्यास लगी है। झील से पानी ले आओ।' शिष्य झील के किनारे चला गया। उसी पल एक बैलगाड़ी झील को पार करने लगा जिससे झील का पानी बहुत गंदा हो गया। शिष्य ने सोचा, 'मैं बुद्ध को यह गंदा पानी पीने के लिए कैसे दे सकता हूं ?' तो वह वापस आया और बुद्ध से कहा, 'वहाँ मौजूद पानी बहुत गंदा है। मुझे नहीं लगता कि यह पानी पीने के लिए लायक है।

लगभग आधे घंटे के बाद, फिर से बुद्ध ने शिष्य से वापस झील से पानी लाने के लिए कहा। शिष्य वापस झील में गया और देखा कि पानी अभी भी मैला ही था। वह लौट आया और इसकी सूचना बुद्ध को दी। कुछ समय पश्चात फिर से बुद्ध ने शिष्य से वापस पानी के लाने के लिए कहा। इस बार शिष्य ने देखा कि कीचड़ नीचे बैठ गया था और पानी साफ और स्पष्ट हो गया था। तो वह एक बर्तन में थोड़ा पानी बुद्ध के लिये लाया । बुद्ध ने पानी को देखा और उसके बाद उन्होंने शिष्य को देखा और कहा, 'क्या आप ने पानी को साफ किया था ? नहीं न, आपने पानी को कुछ देर के लिए छोड़ दिया और कीचड़ अपने आप ही नीचे बैठ गया और आपको साफ पानी मिल गया। हमारा मन भी इसी तरह है ! जब यह परेशान होता है, इसे छोड़ दो, थोड़ा समय दो, यह अपने आप शांत होने लगेगा । इसे शांत करने की कोशिश न करो। 'मन की शांति' एक सरल प्रक्रिया है । हमेशा मन को शांत रखना चाहिए। एक महान जीवन आगे है ... कभी आप अपने करीबियों को नहीं छोड़ें । आपको उनमें कुछ दोष मिल जाए तो बस अपनी आँखें बंद करके ये याद करें कि आपने एक-दूसरे के साथ कितने अच्छे समय बिताए हैं। कोई भी व्यक्ति न तो स्वयं के गले लग सकता है और नहीं स्वयं के कंधे पर रो सकता है। जीवन में हम सबको एक दूसरे के साथ ही रहना है।

- चित्रलेखा पन्डा
प्राथमिक शिक्षिका
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

दिल की दास्तां

यू तो कमी न हैं इस दूनिया में हमदर्द और हमदर्दी की,

पर न जाने क्यो किसी की याद सताती हैं सर्द के मौसम सी ।

उन पलो की तस्वीर जो तुम्हारे संग बिताए कल्पवृक्ष के छाव में,

न सोचा था तकदीर बदल देगी उन पलो को केवल आशाओं में ।

तुम करीब ही न आएँ तो इज्हार क्या करते,

खुद बने हैं निशान, शिकार क्या करते,

भुला न पाए वो लफ्ज ओर साथ गुजारे वो पल

रह गए वे सिर्ए ख्वाबों में,

अब हम इंतजार न तो ओर क्या करते ।

मांगी थी दुआ के हकीकत में बदल जाए यह आशा ,

परन्तु दिलों के इन दायरों को दूर करने में खुदा भी क्या करते।

मर गए पर खुली रही आंखें ;अब इससे ज्यादा और इंतजार भी क्या करते ।

खत्म हो गई इम्तहान इंतजार की, रूक गई बोछार आशाओं से आसूओं की ,

साथ ज्यों मिला आपका ज़िन्दगी मे, लगा छूली चोटी ख्वाबों के आसमानों की ।

उत्तिर्ण हुए या नहीं इस इम्तहान में, खबर नहीं हैं इसकी हमें,

साथ जो मिला आपका ज़िन्दगी मे, जवाब इन सवालो के भी फिके लगने लगे है हमे ।

आप करीब जो आए, तो कर गए हम इज़हार,

बनाकर आपको निशाना, कर गए हम शिकार ।

भूल न पाओगे ये लम्हा, ये वादा है हमारा आपसे,

जादु जो हमने कर दिया है इस पल पर, घड़ी की टीक-टीक भी लगने लगेगी चलती हुई जल्द से।

थम जाए यें वक्त यहीं, रूक जाए ये चान्दनी रात और चन्दा यहीं ।

देख ले हम अपनी खुबसुरत सी चांद को आज, न जाने कल दोबारा ये मौका फिर आए या नहीं,

जिन्दगी जो अब नई मिली हैं हमे, शुक्रिया के आप जीना सीखा गई तो सहीं ।

शुक्रगुज़ार है हम उस खुदा के जिन्होने सिखा दिया मुझे बात वहीं,

कि आए थे हम अकेले और जाऐंगे भी हम अकेले ही ।

तो बदं करते हैं यह खोज अपनी रानी की,

और बनाते हैं एक नई मशाल इस अद्भुत कहानी की ।

- राहुल महनोत,
छात्र,
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

तुम्हे फुर्सत मिले तो कभी

तेरे बिन अब रहा नहीं जाता

अब और अकेलापन सहा नहीं जाता

अपनी प्यार की गाथा के बारे में अब और कहा नही जाता

पता नहीं कैसा प्यार कर बैठा

बेवफा का भी साथ छोड़ा नहीं जाता

तुम्हे फुर्सत जो मिले कभी

आना एक बारी मेरे दिल में भी

अब ये मेरा नहीं है मेरे से ज्यादा तेरा भी ...

तेरी साँसों से जुड़ी है साँसे मेरी

सांस तू ले तो ,जीता हूँ मै भी

मैं हूँ बिता हुआ पल तो

तू है मेरा आने बाला कल भी

मुझको समेट लेना तू बाहों में

पास आऊँ जो तेरे कभी

खो न जाऊँ वरना कही मै

क्युकी मुझको चाहते है सभी

फिर भी हर सुबह... चेहरा

आँखों में होता है बस तेरा

अक्ल न आई तुझे अभी भी

बाहों में आके तुम मेरी

महसूस करो धड़कन मेरी

दिल मेरा धड़के तेरे लिए भी

तुम्हे फुर्सत जो मिले कभी

आना एक बारी मेरे दिल में भी

-रिंकू मीणा,
छात्र,
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

प्यार

कोई चीज़ न है प्यार करने की,

यह तो दास्तां है दो दिलो की ।

प्यारी सी खुशी, मीठा सा गम ,

यही तो कारवां हैं इन दायरों की।

वो प्यार ही क्या जिसमें दर्द न हो,

वो खुशी ही क्या जिसमें गम न हो,

बना बैठा हुँ मोहताज तुम्हारे प्यार का

अब वो जन्नत ही क्या जहां साथ हम न हो।

ख्याल आता है देखकर तुमको यही मेरे मन में

करदे सातो जनम तुम्हारे नाम इसी जनम में।

रह न पाएंगे अब एक पल भी तुम्हारे बिन

चुरा लिया तुमने मुझको मुझी से एक ही क्षण में।

दर्द हो तुम मेरे इस प्यार में,

मरहम भी तुम्ही इस इकरार में,

दर्द का रिश्ता जो बना लिया तुम्हारे संग

खासियत भी यही है इन शब्दों की धार में।

मेरे दिल की धड़कन हो तुम,

मेरे जीवन की ईंधन हो तुम,

जुदा न होना कभी मुझसे

नहीं तो, मेरे बिना अकेली ईंजन हो तुम।

अज़ब सी यह प्रेम कहानी हमारी

गज़ब जिसमें यह अदा तुम्हारी,

चल पड़े अब हम अनजान रस्ते पर

अब यही जन्नत और यही मन्नत हमारी।

- राहुल महनोत,
छात्र,
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

नाम उसका राम होगा

गगन के उस पार क्या
पाताल के इस पार क्या?
क्या शितिज के पार, जग
जिस पर थमा आधार है?
दीप तारों की जलाकर
कौन नित करता दिवाली?
चाँद सूरज घूम किसकी
आरती करते निराली?
चाहता है सिंधु किस पर
जल चढ़ा कर मुक्त होना?
चाहता है मेघ किसके
चरण को अविराम धोना?
तिमिर-पलकें खोलकर
प्राची दिशा से झाँकती है?
माँग में सिंदूर दे
उषा किसे नित ताकती है?
गगन में संध्या समय
किसके सुयश का गान होता?
पक्षियों के राग में किस
मधुर का मधु-दान होता?
पवन पंखा जल रहा है
गीत कोयल गा रही है।
कौन है,किसमें निरंतर
जग विभूति समा रही है
यदि मिला साकार तो वह
अवध का अभिराम होगा।
हृदय उसका धाम होगा
नाम उसका राम होगा।

- अर्पण मिश्र
नवी 'ब'
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

फूल

रंग-बिरंगे प्यारे फूल
कितने हैं ये न्यारे फूल।
खुशबू अपनी दूर-दूर तक फैलाते
सबका तो ये मन हैं लुभाते।

सुन्दर पंखों वाली तितलियाँ
सारी इनकी सहेली हैं।
कैसे फूल हैं इतने सुन्दर,
यह अब तक एक पहेली है।

लाल-रंगीले, नीले-पीले;
हर रंग में आते हैं;
दादी-मामी, बूढ़े-बच्चे,
सबका मन मोह जाते हैं।

फूल नहीं तो फल नहीं,
फल नहीं, तो वृक्ष कहाँ से आएंगें ?
और इस धरती पर वृक्ष न हो तो,
मनुष्य भी कैसे जी पाएंगे ?

तो यह बात भी जानना ज़रूरी है,
की फूल केवल एक सुन्दर वस्तु नहीं, ए इन्सान;
यह भी जीवन का एक अमूल्य अंश है,
भले ही हो छोटा सा, किन्तु है तो इश्वर का ही वरदान |

तो फूलों को भी दो सम्मान,
उनमे भी थोड़ा जीवन है,
क्यूंकि सबकी सेवा करना हमारा कर्म है
और वही हमारा जीवन है।

- गीतांजली प्रधान
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना- मन

परमात्मा की सबसे असाधारण और अद्भुत रचना है - मनुष्य का मन। मन शक्तिशाली होने के साथ-साथ निर्बल भी है, ईमानदार होने के साथ-साथ बेईमान भी है। यह मन मनुष्य को सफलता की ऊंचाइयों तक ले जा सकता है और विनाश की हद तक भी पहुँचा सकता है। यह बहुत चालबाज़ और रहस्यमय है, मनुष्य के पास जो कुछ भी है उनमें से सबसे अधिक विनाशकारी और घातक मनुष्य का मन है।

अन्य कोई ऐसा यंत्र नहीं है जो इतना जटिल होते हुए इतना सूक्ष्म हो और जिसमें अपार क्षमता भी हो। इस मनरूपी यंत्र को हम कैसे इस्तेमाल करते हैं, यह पूरी तरह हम पर निर्भर है। हम इसके द्वारा विनाश कर सकते हैं या फिर इसकी पूरी क्षमता को अच्छे कार्यों के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसी है मन की शक्ति!

हम अपनी कमजोरी के कारण और आत्मसंयम की कमी के कारण मन के अधीन हो जाते हैं और उसे बेहद ताक़तवर बना देते हैं। हम मन को पूरी आज़ादी देकर इसे बे-लगाम छोड़ देते हैं और ख़ुद इसके गुलाम बन जाते हैं। हमें ख़ुद अपने मन को दिशा दिखानी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हम वहीं चल पड़ते हैं जिस दिशा में मन ले जाए। कौन इस बात से इनकार कर सकता है कि मन ज़्यादातर मूर्खतापूर्ण हरकतें ही करता है और कभी-कभार ही अक्लमंदी से काम लेता है। स्वतंत्र इच्छा, तर्क करने की शक्ति, बुद्धि और सोच-समझ के बारे में हम बात तो करते हैं लेकिन हमारे वचन, विचार और हमारी करनी साफ़-साफ़ बता देते हैं कि हम कभी-कभार ही इन शक्तियों का इस्तेमाल करते हैं।

इस पर ज़रा गहराई से सोच-विचार करें। अगर हम उन सभी विचारों को जो हमारे मन में आते हैं, स्वीकार कर लें तो शायद हम ख़ुद से भी नज़रें नहीं मिला पाएँगे। जिस तरह के विचार लगातार हमारे अंदर चलते रहते हैं, अगर हमें उन्हें ज़ाहिर करना पड़े तो हम ख़ुद ही बौखला जाएंगे। हमने सालों से अपने मन में क्रोध और मलिनता इकट्ठा कर रखी है, उसका पता चलने पर हम बुरी तरह से दंग रह जाएँगे।

यह इस जीवन का कड़वा सच है कि "हमारा मन कौवे की तरह है। यह हर चमकने वाली चीज़ को उठा लेता है, चाहे धातु से बनी इन चीज़ों को इकट्ठा करने से हमारे घर में कितनी ही असुविधा क्यों न पैदा हो जाए"।
पूर्वज इन पर लगाम लगाने की और इन्हें वश में करने की ज़रूरत पर ज़ोर देते हैं। जैसा कि महात्मा गाँधी ने कहा है कि अगर एक बार हमारी इंद्रियाँ बेक़ाबू हो जाती हैं तो यह उस "दिशाहीन समुद्री जहाज़ में सफ़र करने जैसा है जिसका चट्टान के साथ टकरा कर टुकड़े-टुकड़े हो जाना लगभग निश्चित है।" मन के आधार पर ही इंद्रियाँ कार्य करती हैं इसलिए मन को आज़ादी नहीं संतुलन की आवश्यकता है।

- जगदीश प्रसाद
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

संभावनाओं के शिखर

संभावनाओं के शिखर में, तलाशता मैं मंजिलें
सत्य क्या असत्य क्या, संशय का पथ मिले,
बेचैन करते कई प्रश्न, जिंदगी के मायने है क्या,
अस्तित्व विहीन जिंदगी जिए..
जब यही प्रश्न जेहन में कौंधता रहे, कहीं प्रलय आती रहे
जिंदगी यूं ही आती जाती रहे,
जो यूं ही भौतिकता के पीछे मतवाले मिले
तब इस समृद्धि के क्या मायने रहे,
सामाजिक सियासतों में फसता यह जीवन
अवशेष मात्र परस्पर आत्मीयता मिले,
तब संभावनाओं के शिखर में तलाशता मैं मंजिले....

कहे ये मन

एक लंबा संघर्ष, फिर खालीपन
सुकून से रूक जाऊं, यही कहे ये मन!!
कई सवालों पर अटके ये मन,
जेहन में फिर सवाल,
अब आगे क्या?
फिर से याद करू, वो पुरानी मंशायें,
दब से गई थी कहीं, थी सक्रिय कभी,
फिर से करूं प्रयास, उन्हें पुनर्जीवित
करने को,
या बढ़ूं आगे, नए बाधाओं से,
नयी चुनौतियों को लेकर,
अपने को विस्तृत करूं

जरूरी है मुलाक़ात

फिर से उन रिश्तों की मजबूती को, करनी है मुलाक़ात
मेरे अपने मुझसे हो रहे दूर, करनी है मुलाक़ात
दोस्तों के शिकवे हुए बहुत, करनी है मुलाक़ात
साथ में रहते हुए भी, हुई संबंध में कड़ुवाहट, करनी होगी मुलाक़ात
उलझनों के इर्द-गिर्द, ये मन,
सुलझाने को, मन की मन से, करनी है मुलाक़ात...

- अंकुर गुप्ता
सहायक प्राध्यापक
यांत्रिकी विभाग
आईआईटी भुवनेश्वर

आधुनिक जीवन

कुछ गाड़ियों में चलते हैं कुछ टुकड़ों पर पलते हैं,
कुछ एसी में रहते हैं कुछ सड़कों पर सड़ते हैं,
इंसानियत को भूलकर लोग धर्मों के लिए लड़ते हैं,
लानत है इस युग पे जिसे आधुनिक कहते हैं।
इस दुनियाँ में भी लोग अजीबो –ओ-गरीब रहते है,
कुछ इंग्लिश का पउआ लगाते हैं तो कुछ रोटी को तरसते हैं,
बुजुर्गों को ठुकराकर लोग गाय को माता कहते हैं,
कुछ दुःखों से वंचित तो कुछ हँसते-हँसते सहते हैं,
लानत है इस युग पे जिसे आधुनिक कहते हैं।
गरीबों की मेहनत पूँजीपति खा रहे हैं,
आज कल के विद्यार्थी हनी सिंह गा रहे हैं,
पेड़ दिन-ब-दिन तेजी से काटे जा रहे हैं,
खुद जंगल कटवाकर धरती को माँ कहते हैं,
लानत है इस युग पे जिसे आधुनिक कहते हैं।
बेघर हुए जंगली को जो जानवर कहते हैं,
वो क्या जानें असली जानवर तो शहरों में रहते हैं,
रेप की घटनाएँ इस कदर हो रही हिंदुस्तान में,
इंसानियत मिटती जा रही है आज के इंसान में,
कुछ लोग बेटियों को धरती का बोझ समझते हैं,
लानत है इस युग पे जिसे आधुनिक कहते हैं।
कोई अपनों को खोता है कोई भूखे पेट सोता है,
जिंदगी के सफ़र में हर गरीब रोता है,
बहुत से झमेले हैं इन दर्द गमों के मेले में,
जीकर भी तुम रहो गुमनामी और अकेले में,
जिंदगी तो मेहमान है पल दो पल जी लेने में,
हर दुःख और हर गम हँसकर पी लेने में,
किसी को होती नहीं सूखी रोटी तक नसीब,
कोई खिला रहा कुत्तों को ब्रेड बटर के पीस
इन ब्रेड बटर को देखकर बदनसीबों के दिल मचलते हैं,
लानत है इस युग पे जिसे आधुनिक कहते हैं।

- प्रशांत कुमार साहू
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

महिला सशक्तिकरण

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि सशक्तिकरण क्या है? सशक्तिकरण का तात्पर्य है 'शक्तिशाली बनाना'। सशक्तिकरण को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानताओं से पैदा हुई समस्याओं एवं रिक्तताओं से निपटने के रूप में देखा जा सकता है। इसमें जागरूकता, अधिकार एवं हकों को जानने, सहभागिता, निर्णय जैसे घटकों को लिया जाता है। महिला सशक्तिकरण पैलिनीथूराई के शब्दों में - 'महिला सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज के विकास की प्रक्रिया में राजनीतिक संस्थाओं के द्वारा महिलाओं को पुरुषों के बराबर मान्यता दी जाती है।

लीला मीहेनडल के अनुसार महिला सशक्तिकरण - 'निडरता, सम्मान और जागरूकता तीनों शब्द महिला सशक्तिकरण में सहायक हैं। यदि डर से आजादी महिला सशक्तिकरण का पहला कदम है, तो तेजी से न्याय से उसकी आवश्यकता पूरी हो सकेगी। यदि महिलाओं को वास्तव में न्याय दिलाना है तो उनकी जांच-परख प्रणाली को और अधिक कार्यकुशल बनाना होगा तथा अराजकता फैलाने वाले तत्वों को सजा देनी होगी।

भारतीय महिलाओं के विषय में डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का कथन है - 'भारतीय नारी श्रम से नहीं घबराती किन्तु आंसुओं की चिन्ता करते हुए वह रोटी, असमान व्यवहार, शोषण से अवश्य डरती है।' इसमें बाबा साहेब ने महिलाओं की वास्तविक वेदना को मुखरित किया है। महिला सशक्तिकरण की अवधारणा बहुआयामी है। यह कोई पुरुष निरपेक्ष नहीं बल्कि सापेक्ष विमर्श है और इसके लिए पुरुषों को भी आगे आना होगा। महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में शिक्षा की अहम भूमिका है। यह महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए प्रथम एवं मूलभूत साधन है क्योंकि महिला के शिक्षित होने पर जागरूकता, चेतना आएगी, अधिकारों की सजगता होगी, रूढ़ियां, कुरीतियां, कुप्रथाओं का अन्धेरा छंटेगा और वैचारिक क्रान्ति से प्रकाश पुंज फूट निकलेगा। शिक्षा के माध्यम से महिलाएं समाज में सशक्त, समान एवं महत्वपूर्ण भूमिका दर्ज करा सकती हैं। शिक्षित महिलाएं न केवल स्वयं आत्मनिर्भर एवं लाभान्वित होती हैं अपितु भावी पीढ़ियां भी लाभान्वित होती हैं। शिक्षा एक ऐसी सम्पत्ति है जिसे न छीना जा सकता है और न ही बांटा जा सकता है। दूसरी ओर ऐसा हथियार भी है जिसके बल पर कोई भी युद्ध लड़ा जा सकता है चाहे वह शोषण,असमानता, अन्याय, अनाचार के विरूद्ध ही क्यों ना हो।

महिलाओं की स्थिति में सुधार के समय-समय पर अनेक प्रयास किसी न किसी रूप में होते रहे हैं। भक्तिकाल में नारियों को पुरुषों के समान भक्ति के योग्य माना गया जिसके फलस्वरूप अनेक महिला सन्तों ने विशेष स्थान बनाया जिनमें प्रमुख हैं - मीराबाई, मुक्ताबाई, केसमाबाई, गंगूबाई व जानी। अकबर ने बाल विवाह, बेमेल विवाह, सती प्रथा को रोकने की दिशा में कई कार्य किये। राजा जयमल की विधवा को अकबर ने सती होने से रोका था तथा पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क ने अपनी 'आलमदारी' में इस प्रथा के विरूद्ध आदेश प्रसारित करवाए। महिलाओं की दशा को सुधारने में अनेक समाज सुधारकों ने महती भूमिका निभाई। जिनमें प्रमुख थे - राजाराममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, वीर सांलिगम, दयानन्द सरस्वती, महादेव गोविन्द रानाडे, बाल गंगाधर तिलक, ज्योतिबा फूले, केशव कवे, बहरामजी मालाबरी, गोपाल कृष्ण आगरकर, हरिदेशमुख इत्यादि। महिला समाज सुधारकों में पण्डित रमाबाई, रमाबाई रानाडे, स्वर्ण कुमारी देवी, रानी स्वर्णमयी, सावित्री बाई फूले, आनन्दीबाई जोशी ने अपना योगदान दिया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जिन महिलाओं ने अपने प्राणों की आहूति देकर इस देश की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उनमें हैं - राजकुमारी अमृतकौर, गन्नोदेवी, मीरा बेन, सुचेता कृपलानी, कमला देवी, मार्गर कासिम, सुहासिनी गांगुली, बेरी बेन गुप्ता, कमला देवी चटोपाध्याय, सरोजदास नाग, सुशीला, जमुनाबाई, दुर्गाबाई देशमुख, कस्तूरबा गांधी, बेगम हजरत महल, शान्ति घोष, सरोजनी नायडू, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, लक्ष्मीबाई, अरूणा आसफ अली, मैडम भीकाजी कामा, रानी चैन्नईया, दुर्गा देवी वोहरा,प्रीतिदत्त पोद्दार, मीमाबाई, इन्दूमति सिंह, रानी अवन्तिबाई, रानी ईश्वरी कुमारी, मीरा पन्ना, रेशू मेन, कुमारी मैना, लाडो रानी, कल्याणी दास,शोभारानी आदि। महिलाओं की स्थिति
शिक्षा सम्पूर्ण अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करके विकास और उन्नति के मार्ग खोलती है। भारत में महिला एवं पुरुष की शिक्षा में विभेदीकरण पाया जाता है। लड़की को 'पराया धन' की संज्ञा देकर उसके सभी अधिकारों का हनन हो जाता है क्योंकि संकीर्ण विचारधारा एवं सीमित ज्ञान के कारण स्वयं महिलाएं भी ऐसा दृष्टिकोण रखती हैं और लड़कियों के साथ हर स्तर पर भेदभाव किया जाता है। खाना,पहनावा, प्यार एवं स्नेह, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय आदि में खुला भेदभाव आज भी देखा जा सकता है। वैश्विक परिदृश्य पर एक नजर डाले तो यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार महिला साक्षरता की
स्थिति विश्व के कुछ देशों में इस प्रकार है।

-आर्शीआ स्वाईं
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

एक रहस्य

थम जाती है कलम
बंद हो जाते हैं अधर
ठहर जाती हैं श्वासें भी पल भर को
लिखते हुए नाम भी... उस अनाम का
नजर भर कोई देख ले आकाश को
या छू ले घास की नोक पर
अटकी हुई ओस की बूंद
झलक मिल जाती है जिसकी
किसी फूल पर बैठी तितली के पंखों में
या गोधूलि की बेला में घर लौटते
पंछियों की कतारों से आते सामूहिक गान में
कोई करे भी तो क्या करे

इस अखंड आयोजन को देखकर
ठगा सा रह जाता है मन का हिरण
इधर-उधर कुलांचे मारना भूल
निहारता है अदृश्य से आती स्वर्ण रश्मियों को
जो रचने लगती हैं नित नये रूप
किताबों में नहीं मिलता जवाब
एक रहस्य बना ही रहता है...

- श्रीजित शुवम
कक्षा-10(ग)
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

उम्र के साथ किरदार बदलता है

उम्र के साथ किरदार बदलता रहा
शख़्सियत औरत ही रही, प्यार बदलता रहा।

बेटी, बहन, बीबी, माँ, ना जाने क्या-क्या
महज औरत का चेहरा हर बार बदलता रहा।

हालात ख़्वादिनों के न सदी कोई बदल पाई
सदियाँ गुज़रती रहीं बस संसार बदलता रहा।

प्यार, चाहत, इश्क, राहत, मुश्क माशूक और हयात
मायने एक ही रहे पर मर्द बात बदलता रहा।

किसी का भार कोई इंसान नहीं उठा सकता यहाँ
कोख में पलकर ज़िस्म एक आकार बदलता रहा।

सियासत, बज़ारत, तिज़ारत, निज़ारत या फिर कभी हुकूमत
औरत बेआवाज़ बिकती रही और बाज़ार बदलता रहा।

बातों से कब तलक बहलाओगे दिल को तुम "सुधीर"
करार कोई दे ना सका बस करार बदलता रहा।

- सुधीर कुमार मिश्र
केंद्रीय जल आयोग

कलयुग के भगवान

देश की भोली-भाली जनता को
गुमराह करना बड़ा ही है आसान
क्योंकि ये हैं ढोंगी बाबाओं
की काली करतूतों से अंजान
अन्धविश्वास, कुरीतियों के शिकार
कुछ लोग पहुंच जाते हैं इनके दरबार
पैसा गंवाकर, समय गंवाकर
सुनते हैं उनके मीठे-मीठे प्रवचन
मान लेते हैं उनको कलयुग का भगवान
धन, व्यापार, ऐश-ओ-आराम
काम हो, तन-मन में और मुख में राम
डरते हैं लोग अब किसी भी आश्रम से
चाहे वह हो बाल आश्रम या हो अनाथाश्रम
इनमें होता है मानवता पर आक्रमण
इन आश्रम पर कई लोगों का
भरोसा है आपार
भले ही होता है इनमें अंग व्यापार
इनके भंडारों से निकलते हैं नर कंकाल
तभी तो हैं ऐसे आश्रम और
इनके मालिक मालामाल।

- वाई पदमिनी
पीजीटी (केमिस्ट्री)
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम एक महान भारतीय वैज्ञानिक थे जिसने भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में वर्ष 2002 से 2007 तक देश की सेवा की। वो भारत के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे क्योंकि एक वैज्ञानिक और राष्ट्रपति के रुप में देश के लिये उन्होंने बहुत बड़ा योगदान दिया था। 'इसरो' के लिये दिया गया उनका योगदान अविस्मरणीय है। बहुत सारे प्रोजेक्ट को उनके द्वारा नेतृत्व किया गया जैसे रोहिणी-1 का लाँच, प्रोजेक्ट डेविल और प्रोजेक्ट वैलिएंट, मिसाइलों का विकास (अग्नि और पृथ्वी) आदि। भारत की परमाणु शक्ति को सुधारने में उनके महान योगदान के लिये उन्हें "भारत का मिसाइल मैन" कहा जाता है। अपने समर्पित कार्यों के लिये उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाज़ा गया। भारत के राष्ट्रपति के रुप में अपने कार्यकाल के पूरा होने के उपरान्त, डॉ कलाम ने विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में एक अतिथि प्रोफेसर के रुप में देश की सेवा की।

उनका व्यवसाय और योगदान :

15 अक्टूबर 1931 को जैनुल्लाब्दीन और आशियम्मा के घर में डॉ कलाम का जन्म हुआ। उनके परिवार की माली हालत ठीक नहीं थी जिसके कारण इन्होंने बहुत कम उम्र में ही आर्थिक सहायता देने के लिये काम करना शुरु कर दिया था। हालांकि अपने काम करने के दौरान इन्होंने कभी-भी अपनी पढ़ाई नहीं छोड़ी। 1954 में तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ़ कॉलेज से उन्होंने अपना ग्रेजुएशन और मद्रास इंस्टीट्यूट से वैमानिकी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की। ग्रेजुएशन के बाद कलाम एक मुख्य वैज्ञानिक के रुप में डीआरडीओ से जुड़ गये हालांकि बहुत जल्द ही ये भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपास्त्र के प्रोजेक्ट निर्देशक के रुप में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में विस्थापित हो गये। डॉ कलाम ने गाइडेड मिसाइल विकास कार्यक्रम के मुख्य कार्यकारी के रुप में भी कार्य किया जिसमें मिसाइलों के एक कंपन के एक साथ होने वाले विकास शामिल थे। डॉ कलाम वर्ष 1992 से वर्ष 1999 तक प्रधानमंत्री के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार और डीआरडीओ के सेक्रेटरी भी बने। पोखरन द्वितीय परमाणु परीक्षण के लिये मुख्य प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर के रुप में उनके सफल योगदान के बाद उन्हें "भारत का मिसाइल मैन" कहा जाने लगा। वो पहले ऐसे वैज्ञानिक थे जो बिना किसी राजनीतिक पृष्ठभूमि के वर्ष 2002 से 2007 वर्ष तक भारत के राष्ट्रपति थे।

उन्होंने बहुत सारी प्रेरणादायक किताबें लिखी जैसे "इंडिया 2020, इग्नाइटेड माइन्ड्स, मिशन इंडिया, द ल्यूमिनस स्पार्क, इंस्पायरिंग थॉट्स" आदि। डॉ कलाम ने देश में भ्रष्टाचार को मिटाने के लिये "वॉट कैन आई गिव मूवमेंट" नाम से युवाओं के लिये एक मिशन की शुरुआत की। देश (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद और इंदौर, आदि) के विभिन्न इंस्टीट्यूट और विश्वविद्यालयों में उन्होंने अतिथि प्रोफेसर के रुप में अपनी सेवा दी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी तिरुअनन्तपुरम् में चांसलर के रुप में, जेएसएस यूनिवर्सिटी (मैसूर), एयरोस्पेस इंजीनियरिंग ऐट अन्ना यूनिवर्सिटी (चेन्नई) आदि। उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों और सम्मान से नवाज़ा गया जैसे पद्म भूषण, पद्म विभूषण, भारत रत्न, इंदिरा गांधी अवार्ड, वीर सावरकर अवार्ड, रामानुजन अवार्ड आदि।

तनुश्री दाश
कक्षा 10-A
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

ई-पत्रिका ‘ नागरिक’ का विमोचन

शायरी

1. सबकी जिंदगी में खुशियाँ देने वाले दोस्त,
   तेरी जिंदगी में कोई गम ना हो,
   तुझे तब भी दोस्त मिलते रहें अच्छे अच्छे,
   जब इस दुनिया में हम ना हो।
2. न जाने किस मिट्टी से खुदा ने तुमको बनाया है,
   अनजाने में इक ख्वाब इन आँखों को दिखाया है,
   मेरी हसरत थी हमेशा से खुदा से मिलने की दोस्त,
   शायद इसीलिये किस्मत ने मुझे तुमसे मिलाया है।
3. सफ़र दोस्ती का कभी ख़त्म न होगा,
   दोस्तों मेरा प्यार कभी कम न होगा,
   दूर रहकर भी रहेगी महक इसकी,
   हमें कभी बिछड़ने का ग़म न होगा।
4. खामोशी और तन्हाई हमें प्यारी हो गई है,
   आजकल रातों से यारी हो गई है,
   सारी सारी रात तुम्हें याद करते हैं,
   शायद तुम्हें याद करने की बीमारी हो गई है।
5. नाजुक सा दिल कभी भुल से ना टूटे,
   छोटी छोटी बातो से आप ना रूठे,
   थोडी सी भी फिकर है अगर आपको हमारी,
   तो कोशिश करना की ये दोस्ती कभी ना टूटे।
6. तुझे देखे बिना तेरी तस्वीर बना सकता हूँ,
   तुझसे मिले बिना तेरा हाल बता सकता हूँ,
   है मेरी दोस्ती में इतना दम,
   तेरी आँख का आँसू आपनी आँख से गिरा सकता हूँ।
7. दोस्ती हर चेहरे की मुस्कान होती है,
   दोस्ती ही सुख-दुःख की पहचान होती है,
   कोई रूठ भी जाये तो दिल पे मत लेना,
   क्यूँकि दोस्ती जरा सी नादान होती है।
8. कभी धूप दे... कभी बदलियाँ,
   दिलो जान से दोनों क़बूल हैं,
   मगर उस नगर में न कैद कर,
   जहाँ जिंदगी की हवा न हो।

- अर्पिता
कक्षा 10 ग
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

माँ और मातृभूमी

माँ कुछ ऐसी होती है
सहनशीलता और ममता की मूरत है।
हाथ पकड़कर चलना सिखलाती है
खेल खेल में बोलना सिखलाती है।
रूखा-सूखा खुद खाकर
सबसे अच्छा बच्चों को खिलाती है।
सूखा बिस्तर बच्चों के सजाकर
गीला बिस्तर पर खुद सो लेती है।
अपने लिए कभी न सोचति
परिवार के लिए सदा चिंतित रहती है।
काम से कभी फुर्सत न पाती
नींद उससे दूर ही रहती है।
अपने बचपन को याद में लाती
जो उसे हरदम तड़पाती है।
अपने माँ के बारे में सोचकर
आँखों में आँसू भर लाती है।
इस दुनिया की सबसे महान
सबसे सुंदर ईश्वर की देन
बच्चों की खुशी केलिए
प्रार्थना वो करती
आरोग्य और खुशहाल ज़िंदगी की
दुआं वो मांगती

अनिमा कुमारी दास
(प्राथमिक शिक्षिका)
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

वर्तमान का बचपन

बचपन यह एक अनमोल और यादगार पल है। यह हर किसी के नसीब में होता। इसमें ऊच-नीच का कोई फरक नहीं होता। परन्तु बचपन की खुशियाँ हर किसी को नहीं मिलती।

बचपन का मजा अकसर गाँव में देकने को मिलता है। सेहेरों में विकाश के चक्कर में बचों से उनके बचपन की अनुभूति छीन ली जाती है। बचपन का मजा कम-से-कम ८ बर्ष तक होना छाहिये मगर माँ-बाप उसे ४ बर्ष की उम्र से ही छीन लेते हैं जो की बिल्कुल अच्छा नहीं है। मुझे अब भी याद है कि किस प्रकार मैं अपने मित्रों के साथ बचपन में खेलता था। किस प्रकार हम छुपन-छुपाई, गिल्ली-डंडा, क्रिकेट, और तमाम खेल खेलते थे। ऐसी शांति और कहाँ! मगर आज बच्चे बचपन का मतलब भी नहीं जानते। खेल खेलते हैं तो बंद कमरे में कंप्यूटर, टीवी और विडियो गेमो से। हमारे माता-पिता के जमाने में तो बच्चे इन चीजों का मतलब भी नहीं जानते थे परन्तु आज बच्चा-बच्चा इन खेलों का शौकीन है।

आज का बचपन तीन लोगों से जुड़ा है- दोस्त, शिक्षक और माता-पिता। जब विद्यालय में हम दोस्तों के साथ होते है ऐसा लगता है जैसे हम अंतरिक्स हैं। दोस्तों की नाक खीचने में, उन्हें चिड़ाने में खूब मजा आता है। परन्तु कभी जब दोस्तों के साथ लड़ाई हो जाती है तो लगता है जैसे हम किसी जानी दुश्मन के साथ लड़ रहे हों लेकिन जैसे ही स्कूल का गेट पार करते हैं हमें उनकी याद आने लगती हैं और अपने आप को ही गुनहगार मानते हैं और यह वादा करते हैं कि और कभी नहीं लड़ेंगे पर फिर अगले दिन हम यह बात भूल जाते हैं और वही दोस्त हमें जिंदगीभर याद आते हैं। बचपन में मिला प्यार और यत्न जिन्दगी में और कभी नहीं मिलता।

अर्थात जिन्दगी बड़ा मुल्यावानन है। इसे ख़ुशी से जीना सीखो और बचपन का खुब आनंद लो और दूसरों को लेने दो।

- संग्राम स्वांई

कक्षा- दशवीं (क), के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

अभिलाषा

मुझे फूल नहीं बनना, काँटा ही बनना है
मैं सबसे बुरा ही सही, पर मुझे सबको खुश करना है ॥
मुझे देवताओं के सिर पर नहीं, दुष्टों के शरीर में गड़ना है
मुझे नारियों के गले में नहीं, दुष्टों के आँखों में रहना है ॥
मुझे किसी की शोभा नहीं बननी, उनकी हिफाज़त करना है
मुझे ख़ुद नहीं चमकना, मुझे दूसरों के चमकाना है ॥
मुझे प्यार न मिले, पर प्यार का गुल खिलाना है
मुझे न रखो उस आसमां पर, जहाँ सितारों को सजाना है ॥
मेरे संग न चलो, मुझे तो नरक में जाना है
परायों को तो छोड़ो, मुझे अपनों ने भी नहीं माना है ॥
मेरी ज़िंदगी खड़ी है उन बदनाम राहों पर
जिसमें मेरी सय्या को, मृत्यु भी न रखे अपनी बाहों में ॥

लोकेश चन्द्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्या.- महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षे. लेप.), ओड़िशा

हौंसला

है हौसलों में अभी जान बाकी
इस परिंदे की है अभी उड़ान बाकी।
आकाश तक ही नहीं जाना मुझे
सारे जहां पर है छा जाना मुझे।
छू लूंगी इस क्षितिज को भी
असिमित अपरिभाषित मेरे अरमान हैं बाकी।

है दिल में यूँ चिंगारियाँ जलती हुई
अब आग के दरिया को पार कर जाना है बाकी।
कुछ इंसानियत अब भी है इस दुनिया में
इंसान को इंसान बनाना है अभी बाकी।
है मज़हब का खेल हो रहा दूरों तक
इसे प्रेम का संदेश बनाना है अभी बाकी।

चलने से ही मंज़िल मिला करती है
सोकर तो ख्वाब ही मिला करते हैं।
है हिम्मत और जज़्बा इस दिल में
पाँचों अंगुलियों को एक साथ मिलाना है अभी बाकी।
चल पड़ी थी यूं ही इस डगर पर
अब अपने अस्तित्व का राज़ समझ में आया।

पत्थर हूँ मैं इस पथ की....
इसे तराशना है अभी बाकी।
इस परिंदे की है उड़ान अभी बाकी
है उड़ान अभी बाकी.... है उड़ान अभी बाकी।।

- श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव
पत्नी- श्री लोकेश चन्द्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्या.- महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षे. लेप.), ओड़िशा

इक पल की ज़िंदगी — बदलती तस्वीर

एक वो दिन थे जो इतने सुहाने
आसमां में पारियाँ रहती थी,
चंदा मामा हाथ में आता
जब माँ कहानियाँ कहती थी।
एक निवाला खिलाने को
सारा आँगन दौड़ा करती थी,
वो माँ ही थी जो हर एक ज़िद को
झट से पूरा करती थी।
बाग बगीचे जंगल गलियाँ
बाहें पसारे रहते थे,
तालाब का कमल, खेत की धारियाँ
हरदम हमें बुलाते थे।
रोकता कोई न टोकता कोई
उछलते भागते रहते थे,
हाथ पकड़कर पापा की
कई मेले घूमा करते थे।

वो पापा ही थे जो अकसर
खेल खिलौने लाते थे,
वो पापा ही थे एक बार भी
कभी नहीं जो डांटते थे।
गाँव भर में अलबेलों की
एक हमारी टोली थी,
हर त्योहार के मज़े लूटते
होली या दिवाली थी।
छोटे-बड़े, अमीर-गरीब के
भेद-भाव न करते थे,
होठों पे सबके हँसी खिला दे
ऐसे प्यारे बच्चे थे।
आज भी जब भी याद आती है
आँखें भर-भर आते हैं,
कहाँ गए वो दिन बचपन के
"आज" को क्यों हम ढोते हैं।

"आराम" खरीदने "आराम" गंवाते
न समय है न सकून है,
काम ही अब तो जान बन गया
जिस्म बना मशीन है।
इक पल कहीं रुक कर कभी
सोचने तक न फुर्सत है,
क्यों ज़िंदा हैं, क्या है मकसद
जब मर गए सारे हसरत हैं।
कल न जाने क्या होना है
चलो! आज को ही जी लेते हैं,
धूप-छाँव की ज़िंदगी से
इक उम्र चुरा ले आते हैं।
पैसा सबकुछ कहाँ होता है...
ये तो बस इक माया है,
इसके पीछे दुनिया सारी
स्वार्थ का काला साया है।
अब तो जागें, अब तो जानें
खुशिओं से घर भरना है,
अब तो मानें, अब तो ठानें
मर-मर के न जीना है।

- सागरिका पाढ़ी
प्राथमिक शिक्षिका,
के. वी. नं:2 भुवनेश्वर

आओ सीखें

फूलों से सीखें नीत हँसना हम

भंवरों से सीखें गाना।

फिर कोयल से सीखें मधुर सुर।

पर्वत से सीखें धीरज न खोना ,

पेड़ों से सीखें दूसरों के लिए त्याग।

बादलों से सब पर छाए रहना।

चंदा से सीखें हम शीतलता बरसाना।

समय कहता है सदा पाबंदी में रहना,

नदी कहती सदा बहते जाना।

शहीदों से सीखें हम देश के लिए कुर्बानी देना।

अनुशासन में रहकर जीवन में खुशियाँ लाना।

हमेशा उनके चेहेरे पर खुशियाँ लाएँगे।

मीनाक्षी महापात्र
प्राथमिक शिक्षिका
के. वी. नं:2 भुवनेश्वर

हिन्दू, मुस्लिम, शिख, इसाई

आपस में सब भाई-भाई,

आखिर इंसान है हम, इंसानियत धर्म का पालन करेंगें ।

नीति और आदर्श के पथपर चलकर

एक अच्छा इंसान बनेंगे ।

माता-पिता का कहना मानेंगें, उनके आगे शीष झुकाएँगे ।

उनको जरूरत पर सदा साथ देंगे।

आज का काम आज करेंगे कल को न रखेंगे बाकी ,

फिर हमको सफलता मिलेगी सदा समय है साक्षी ।

फूलों जैसे अपने विद्यालय के बच्चों को।

इस जीवन मूल्यों को सिखाएँगे ।

हमेशा उनके चेहेरे पर खुशियाँ लाएँगे।

स्वच्छ भारत

स्वच्छ भारत ! स्वच्छ भारत ! का नारा सब लेते है ,
मैं पूछती हूँ , क्या सची में वे सब भारत को स्वच्छ बनाते हैं?
स्वच्छ भारत का मतलब नहीं, सिर्फ झाड़ू और पोछा लगाना ,
स्वच्छ भारत का मतलब है, अपने मन को साफ रखना ।

पहले अपने मन, मंदिर को स्वच्छ करना,
तब जाकर स्वच्छता का अभियान चलेगा ,
जब मन में द्वेष भरा होगा तो भारत कैसे स्वच्छ होगा?
कैसे गंगा स्वच्छ होगी ?
और कैसे गांधीजी और मोदीजी का सपना सच होगा?

पहले हम को एक होना है ,
अपने मन को स्वच्छ रखना है ।
एक दूसरे का मान रखेंगें,
कोई किसी का हाथ न छोड़ेगें
एक होकर भारत बनाएगें,
धर्म निरपेक्ष का मान रखेंगें ।
आओ साथियों हाथ बढ़ाओ,
मिलकर भारत को आदर्श बनाओ ! आदर्श बनाओ ! .....

- तृप्ति साहू
के.वि.नं 2 भुवनेश्वर

छोटा सा प्यारा सा :- मेरा गाँव

कोयल अपनी भाषा बोलती है ,
इसलिए आज़ाद रहती है
किन्तु तोता दूसरों की भाषा बोलता है
इसलिए पिंजरे में जीवन भर
गुलाम रहता है ,
अपनी भाषा ,अपने विचार और
अपने आप पर विश्वास करें ----------।

वही अपनापन हमको खुशी देता है जो अपनापन केवल गाँव में मिलता है। मुझे जब छुट्टी मिल जाती है ,दिल खुश हो जाता है मानो पक्षी पिंजरे से आज़ाद हो गया और उड़ चला अपने घोंसले की ओर और मैं भी उड़ चलता हूँ उस जगह को जहां मेरा प्यारा- सा,छोटा - सा गाँव है ,जो मुझे हर पल याद आता है | वह गाँव जिसमें सूरज बूढ़े पीपल के पीछे से मुस्कराता हुआ उदय होता है,उसकी सुनहरी किरणें बड़े से तालाब की लहरों पर झिलमिला उठता है। जब मैं गाँव जाता हूँ तो मुझे देखते ही सबकी आँखें चमक उठती हैं और बड़ी आत्मीयता के साथ मुझसे मिलते हैं |

मेरा गांव छोटा सा ,प्यारा सा है | गाँव में जब मैं घूमता हूँ सब लोग हमसे यही कहते हैं –" बेटा ,बहुत दिनों के बाद आए हो | इस बात का कोई जवाब हमारे पास नहीं होता |मैं उनके चरण छू कर बस इतना ही कहता हूँ –आप कैसे हो |

मेरे गाँव के कच्चे –पक्के मकान ,टूटी-फूटी गाँव की गालियां ,बूढ़े पीपल का पेड़ ,तालाब सब मेरा स्वागत करते हैं ,आज भी उन कच्चे-पक्के घरों के लंबे-चौड़े आँगन गोबर से लिपे-पुते होते हैं |

आज गाँव में सब कुछ पहले जैसा नहीं है ,अब गाँव में विद्यालय ,डाकखाना हो गया है ,गाँव में बिजली आ गई है ,अब खेतों में नलकूपों से खेतों की सिंचाई हो रही है | फसलें ,बीज ,खाद और कृषि यंत्रों में गुणात्मक सुधार हुआ है , अच्छा लग रहा है | मेरा गाँव उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है | मैं शहर के साथ-साथ जीना चाहता हूँ |गाँव में शहर जैसा विकास करना गलत नहीं किन्तु गलत यह है "गाँव के लोगों के अंदर की सरलता और मानवता का खत्म हो जाना "|

आज भी मैं अपनी गाँव की मिट्टी की सुगंध के एहसास से पुलकित हो उठता हूँ |अपने अशिक्षित आत्मीयजनों के साथ सुख-दुख में शामिल होकर मुझे बहुत सुख मिलता है |स्वाधीनता के इतने वर्ष बीत जाने पर भी यह गाँव दूसरे गाँव जैसा अन्यगाँव से आगे नहीं गया | निर्धनता और पिछड़ापन इसे घुन की तरह खाए जा रहा है |मैं हमेशा मेरे प्यारे गाँव की खुशहाली के बारे में सोचता हूँ जो मेरे लिए स्वर्ग से भी बढ़कर है –छोटा सा ,प्यारा –सा मेरा गाँव |

भवानी शंकर बेहेरा (शिक्षक)
के. वी. नं:2 भुवनेश्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60वीं बैठक का कार्यवृत्त

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60वीं बैठक दिनांक 06.03.2017 को अपराह्न 03.00 बजे अध्यक्षीय कार्यालय "भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर" के सामंतपुरी परिसर में प्रो.आर.वी.राजकुमार, अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में प्रो.प्रेमचंद पाण्डेय, वरिष्ठ प्राध्यापक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर, मुख्य अतिथि एवं श्री अतुल कुमार नायक, मुख्य अभियंता, केंद्रीय जल आयोग, विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

बैठक का आरंभ करते हुए श्री यमुना प्रसाद, सदस्य-सचिव (कार्यवाहक), नराकास, भुवनेश्वर (के.) ने सभी सदस्यों का स्वागत किया और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर (के.) की गतिविधियों एवं इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय की अनुमति से कार्यसूची पर बिंदुवार चर्चा प्रारंभ की गई।

डॉ. राज कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, एसईओसीएस एवं प्राध्यापक प्रभारी (राजभाषा), भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने नराकास भुवनेश्वर द्वारा की जा रही गतिविधियों जैसे नराकास की वबेसाइट का निर्माण, ई-पत्रिका का प्रकाशन, सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित प्रतियोगिता एवं कार्यशाला की जानकारी दी और सभी सदस्य कार्यालयों से सहयोग की अपील की।

मद सं. 60.0 **गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि :-** सदस्य-सचिव ने दिनांक 24.08.2016 को आयोजित 59वीं बैठक के कार्यवृत्त को पुष्टि प्रदान करने हेतु प्रस्तुत किया। तदोपरांत सदस्यों ने सर्वसम्मति से 59वीं बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की।

मद सं. 60.1 **ऑनलाइन पत्रिका हेतु आलेख :-** बैठक में नराकास, भुवनेश्वर के अंतर्गत आने वाले सभी कार्यालयों से अनुरोध किया गया कि वे अपने-अपने कार्यालय से नराकास की ऑनलाइन छमाही पत्रिका के लिए लेख तथा उनके कार्यालय में प्रारंभ किए जाने वाले नये कार्यों की जानकारी राजभाषा विभाग, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर को भेजें ताकि नराकास की ऑनलाइन पत्रिका का प्रकाशन यथाशीघ्र हो सके।

कार्रवाई – सभी सदस्य कार्यालय/ सदस्य-सचिव

मद सं. 60.2 **नराकास के विभाजन पर विचार-विमर्श :-** बैठक में नराकास के विभाजन के संबंध में गृह मंत्रालय से प्राप्त पत्र पर गहन विचार-विमर्श किया गया। बैठक में उपस्थित नाराकास के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने विभाजन पर असहमति प्रकट की। नराकास, भुवनेश्वर के सभी कार्यालयों ने एक साथ रह कर राजभाषा को आगे बढ़ाने की इच्छा व्यक्त की।

अध्यक्ष महोदय का अभिभाषण : प्रो. आर. वी. राजकुमार ने बैठक में उपस्थित सभी कार्यालयाध्यक्षों तथा उनके प्रतिनिधियों के साथ उपस्थित सभी हिंदी अधिकारियों का स्वागत एवं अभिवादन किया और नराकास की बैठकों में अधिकतर कार्यालयाध्यक्षों एवं उनके प्रतिनिधियों की उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त की । अध्यक्ष महोदय ने बैठक में उपस्थित सभी महिला सदस्यों को आगामी महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी और महिला सशक्तिकरण पर बल दिया । प्रो. राजकुमार ने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि नराकास के सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा हिंदी के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा एकजुट रहने का विचार और मिल कर राजभाषा के लिए कार्य करने की भावना से मैं बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। यह एक बहुत बड़ा फैसला है। उन्होंने कहा कि नराकास, भुवनेश्वर शायद सबसे बड़ा नराकास होगा, जिसमें लगभग 120 सदस्य कार्यालय हैं। अध्यक्ष महोदय ने अपने संस्थान के भुवनेश्वर से अरगुल स्थानांतरित होने पर सभी सदस्यों को वहाँ आने का निमंत्रण देते हुए कहा कि नराकास की आगामी बैठक, जो अगस्त 2017 में निर्धारित है, उसे अर्गुल में कराया जाय तो मुझे प्रसन्नता होगी। उन्होंने अर्गुल के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह वही स्थान है जहां अंग्रेजों को विजय प्राप्त करने में नाकों चने चबाने पड़े थे। यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। आप सभी इस ऐतिहासिक स्थल पर अवश्य आयें और हमारे विश्वस्तरीय संस्थान को भी देखें जो अपने-आप में काफी महत्वपूर्ण है। हमारा प्रयास है कि जल्द ही हम ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन करें जिसमें आप सभी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले सकें। अध्यक्ष महोदय ने एक बार फिर से सभी सदस्यों का धन्यवाद एवं अभिवादन करते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. प्रेमचंद पाण्डेय ने अपने अभिभाषण में अपने संस्थान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भुवनेश्वर स्मार्ट सिटी में प्रथम पायदान पर है यह हमारे लिए गर्व का विषय है तथा राजभाषा हिंदी में कार्य करने में भी हमें वैसा ही अनुभव होता है। अपने देश के वैज्ञानिकों द्वारा 104 सेटेलाईटों के सफल प्रक्षेपण पर गर्व करते हुए उन्होंने कहा कि हम हिंदी के विकास के क्षेत्र में भी ऐसा कार्य कर सकते हैं, जो सबके लिए मील का पत्थर साबित हो। हमें मिल कर विभिन्न विषयों पर, चाहे वो विषय तकनीकी विषय ही क्यों न हो, हिन्दी भाषा में सेमीनार, कार्यशाला आदि का आयोजन करना चाहिए और हम अपने संस्थान में यह कार्य अवश्य करेंगे। मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आगे आयें और हम सभी मिलकर इस कार्य को सफल बनायें। प्रो. पांडेय ने उड़ीसा की विशेषता को दर्शनार्थियों के बीच हिन्दी माध्यम से प्रचारित-प्रसारित करने पर बल दिया और कहा कि बेधड़क हिंदी का प्रयोग कीजिये, यदि प्रारंभ में उसमें कुछ अंग्रेजी शब्द आये तो आने दीजिये, आगे इसे सुधारा जा सकता है ।

बैठक में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री अतुल कुमार नायक मुख्य अभियंता, केन्द्रीय जल आयोग, ने अपने संबोधन में अध्यक्ष महोदय तथा बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए इस विचार की सराहना की कि नराकास का विभाजन न हो। उन्होंने 'ग' क्षेत्र में मिल रहे लाभ पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम सभी को 55% का जो लक्ष्य राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्राप्त है हमें उसका लाभ उठाते हुए अपनी प्रगति करनी चाहिए, परंतु यह कहते हुए दुःख होता है कि हम उसे भी हासिल नहीं कर पाते। श्री नायक ने अपने कार्यालय में होने वाली कार्यशालाओं की महत्ता पर प्रकाश डाला और उससे होने वाले लाभ के संबंध में अपने अनुभव को साझा किया। उन्होंने अनुरोध किया कि सभी कार्यालय समय पर अंशदान नराकास में जमा करा दें जिससे नराकास अपने कार्यक्रम का संचालन सुचारू रूप से कर सके।

बैठक में उपस्थित श्रीमती आशा घोष जी ने महिला सशक्तिकरण पर प्रकाश डालते हुए अध्यक्ष महोदय एवं उपस्थित सभी सदस्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करते हुए बैठक का समापन किया।

(यमुना प्रसाद)
सदस्य-सचिव, नराकास, भुवनेश्वर

(प्रो.आर.वी.राज कुमार)
अध्यक्ष, नराकास एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर

59 वीं बैठक के दौरान नाट्य मंचन